लावनीब्रह्मज्ञान

5??

लावनीब्रह्मज्ञान

لاونی برم گیان بنارسی داس



मतबअ ज्वालाप्रकाश में लाला ज्वाला प्रसाद के प्रबंध से छापीगई॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथलावनीबाल्मीककीप्रारम्भः

चाहे जपो तुम राम राम चाहे भजलो तुम राम ॥ उल्टा सीधा राम नाम हर विधी से आना कामजी ॥ त्रेतायुग में एक पुरुष करता पाव ट भारी ॥ कितनो ही को मारा उस ने पाप किये भारीजी ॥ हत्या करके उसकी सूरत होगई हत्यारी ॥ बहुत किये अपराध बोझ से पृथ्वी तक हारीजी धर्म राज भी जी में डरै ॥ यह पातक कोई कहां धरै ॥ अब यह पापी कैसे तरे ॥ दोहा ॥ कभी न सुमिरा राम को ना दया करी नादान ॥ कितनो ही का धरा मारी कितनो की की जान ॥ कौन पुन्य से होगा इसका बाल्मीक सा नाम ॥ उलटा सीधा राम राम हर विधी से आता कामजी ॥ १ ॥ एक समय नारद मुनिने किया इधर फेरा ॥ वाल्मीक ने आ कर नारद मुनी को घेराजी ॥ नारद मुनिने कहा बचन । सुनले तू यह मेरा ॥ क्यों मुझको मारे है मैंने किया है क्या तेराजी ॥ जदै पापी बोला ललकार ॥ मेरा तो है यही कार ॥ कितनों हीको डाला मार ॥ दोहा ॥ नहीं मेरी कोई बनि है नहिं करता मैं खेती ॥ कुटुंब अपना पालता हूं लूट मार सेती ॥ क्या जाने कितनो से मैंने किया यही सग्राम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर बिधीसे आता कामजी ॥ २ ॥ बाल्मीक को फि र नारदजी मुनिने यह समझाया ॥ तैने धन लूटा सो तेरे कुटुंब ने खायाजी ॥ दौलत का हिस्सा तेरे सब घरभर ने पाया ॥ पाप जो तेरे किया उसे नहीं किसी ने बटवायाजी ॥ दारा सुत भगनी माई ॥ सब

से तुम कहो यह नाई ।। पाप मेरा लो बटवाई ।। दोहा ।। जो चो-
रे पाप को लेवे सब बटवाय नौ तू गुरु को मारियो अपने गु-
ह से आय ।। इतना सुनके बाल्मीक उठ धाया अपने धाम ।। उल
टा सीधा रामनाम हर बिधी से आता काम जी ।। ३ ।। चलते चल
ने बाल्मीक पहुंचा अपने डेरे जी ।। भाई बंधु और लोग वहां के
सब उसने टेरे जी ।। सुन सुन के सब उठ धाये औ बैठे चौफेरे ।। बा
ल्मीकने कहा बचन यह सुनलो सब मेरे ।। जो जो धन मैं हर ला-
या सो सो सब तुमने खाया ।। पाप मेरा नहीं बटवाया ।। दो० ।। अब
मेरे पाप को सब कोई बटवावो ।। मैं लाऊं धन लूटके तुम घर बैठे
खावो ।। जितनी दौलत हरूंगा मैं सब तुमही को दूंगा दाम ।। उल
टा सीधा राम नाम हर बिधी से आता काम जी ।। ४ ।। बाल्मीक का
सुन बचन सब बोले नर नारी ।। क्या जाने है हम तेने है कितनो
की जान भारी ।। इस पाप से काम नहीं है तुमही पाप धारी ।। पा
प किये से अंत समय में होनी है ख्वारी जी ।। बाल्मीक हो कर ला-
चार ।। छोड़ दिया अपना घर बार ।। मन में करता सोच बिचार ।। दो०
भाई बिरादर त्याग के अब चले गुरु के पास ।। वो चाहें तो पाप का
एक पल में कर देय नाश ।। अब घर से कुछ काम नहीं बस गया मैं
इस ग्राम ।। उलटा सीधा राम नाम हर बिधी से आता काम जी ५
नारायण ने करी कृपा जब हुआ उसको बैराग ।। जितने खो
टे कर्म थे उनको छिन में दीना त्याग ।। नारद मुनि के पास आ
या और लागे उसके भाग ।। दिया सीस उनके चरणों में किया
बहुत अनुराग ।। कहा गुरुजी सुनो बचन आज मिले तुम्हा
रे दर्शन ।। अब मेरा होवेगा तरन ।। दोहा ।। ० ।। ० ।।
भाई बिरादर कुटुंब के कोई नहीं बांटे पाप ।। तुम अपनी
कृपा करो काटो मेरे संताप ।। तुमही गुरु मैं कू चेला सिरकु

किया परनाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधी से आता का
मजी ॥ ६ ॥ फिर नारद मुनिने देखा अब हुवा इसे कुछ ज्ञान
॥ राम नाम रटने से होवेगा इस का कल्यान जी ॥ वोही मंत्र
उपदेश दिया और बताया उसको ध्यान ॥ इसी नाम से पाप
तेरे होवेंगे पुन्य समान जी ॥ अब तेरा होगया भला ॥ कि
सीका मत काटियेगला ॥ पाप तुम्हारे सब दिये जला ॥ ६ ॥
दो० ॥ बालमीकने राम का मन में जाप करा ॥ राम नाम के र
नाम में निकला मरा मरा ॥ बड़े सोच में घट आया पग छिये
गुरु के धाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधी से काम जी
॥ ७ ॥ बाल्मीक ने कहा गुरु जी राम नाम गया खोय ॥ मैं क
हता हूं राम राम तो मरा मरा मुख होय जी ॥ कहा नारद मु
निने कहा जपे है यही नाम सब कोय ॥ मरा मरा कहने से
राम जी सब दुख डाले धोय जी ॥ बाल्मीक निश्चय करके ॥
बैठ गया आसन भरके ॥ उलटा नाम हृदय धरके ॥ ० ॥ ० ॥

॥ दोहा ॥

नारद मुनि तो चल दिये वो बैठा ध्यान लगाय
मरा मरा रटने लगा गई भूख प्यास बिसराय

बरषा ऋतु जाड़ा झेला गरमी में सही अति घाम ॥ उलटा
सीधा राम नाम हर विधी से आता काम जी ॥ ८ ॥ शरीर की
सुध नहीं रही और तन पे जमगई घास ॥ और आस सब
छोड़ लगाई मरा मरा की आस जी ॥ जब तो राम ने करी
क्षमा आप हुंचे उसके पास ॥ बाल्मीक के घट में अपना किया
राम ने बास ॥ ब्रह्म ज्ञान दे दिया उसे ॥ अपनी आत्मा किये उसे
दो० ॥ जब तो ताली खुल गई भये बाल्मीक चैतन्य ॥ कंचन सा
तन बन गया पाये निर्गुण दर्शन ॥ बाल्मीक के घट में राम ने किया

आप विश्राम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर बिधी से आता कामजी ॥ ९ ॥ मरा मरा कहने से होगये बालमीक ज्ञानी ॥ रामायण की कही काया होगई सिद्ध बानी ॥ दस हजार बरसों की बात आगे सब पहचानी ॥ भूत भविष्यत बर्तमान यह तीनों राह जानी ॥ उलटा नाम जपा भाई ॥ तिसारयह पदवी पाई ॥ बालमीक की कविताई ॥ दो० बिष्नु सहस्त्र नाम में श्री राम नाम है सार ॥ जो कोई सुमिरे राम को होता उनका उद्धारा ॥ सकल कामना मिले उसे जो जपै नाम निष्काम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर बिधी से कामजी ॥ १० ॥ मरा मरा कहने से है ऐसे पापी तरते ॥ राम राम जो रटे हैं वो क्या जाने क्या जाने क्या करते जी ॥ राम नाम ने समुद्र में अब तक पहाड़ तरते ॥ वोह भी होजाय राम राम को जो हिरदे में धरते जी ॥ राम नाम की सब माया ॥ पार किसी ने नहिं पाया ॥ यही नाम चहूं दिशा छाया ॥ दो० ॥ जो कोई ऐसे छन्द को गावै सुनै दे कान ॥ भुक्ति मुक्ति पावै नहीं और हो उसको कल्यान ॥ कहै देवी सिंह बनारसी है राम नाम सरनाम ॥ उलटा सीधा राम नाम हर विधी से आता कामजी ॥ ११ ॥ जो कहता हम करते वोह दुख भरता है ॥ जो करता जगके कार वोही करता है ॥ जो कहता हमने वेद पढ़े हैं चारी ॥ उस को कहते हरि इस्की मति है मारी ॥ कोई कहता हम क्षत्री हैं हम ब्रह्मचारी ॥ सब अहंकार में फसे हुए नर नारी ॥ हम जो बुद्धी को तजें करें लाचारी ॥ उसको तजे करे लाचारी ॥ उसको मिलते एक पल भर में गिरधारी ॥ जो निष्फल पूजा करें वोही तरता है ॥ जो करता जगके कार वही करता है ॥ १ ॥ जो कहता हम ते। नित्य दान

करते हैं ।। इसका पन मेश्वर नहीं मान करते हैं जो देके
बस्तु मन में गुमान् करते हैं ।। वो स्वर्ग छोड़ फिर नर्क पान
करते हैं ।। जो अहंकार तज हरिका ध्यान करते हैं ।।
जो करता है सो वही धरता है ।। जो करता जगके कार वोही
करता है ।।२।। जो कहता हम हैं बड़ी कवीश्वर ज्ञानी ।।
उसको हरि कहते इसके मिथ्या वानी ।। कोई कहता हम
हैं वड़े वीर अभिमानी ।। उसको हम कहते यह तो है दहकानी
कोई है बनके बैठा राजा और कोई रानी ।। इस पृथ्वी पर है वड़े
२ अभिमानी ।। इस अहंकार से अपना दिल डरता है ।। जो-
करता जगके कार वोही करता है ।।३।। जो कहता मैने वड़ी
जग जीती है ।। वह मरता है फिर कभी नहीं जीता है ।। जिस
ने जिसने अहंकार यारों कीता है ।। वह दो दिन में दुनियां से
हो बीता है ।। अब देवी सिंह दिल फटा हुआ सीता है ।। जो क
र्म किया प्रभु के अर्पन दीता है ।। कहे बनारसी हर भक्त नहीं
मरता है ।। जो करता जगके कार करता है ।।४।। जो जबां से
कहके सखुन पलट जाते हैं ।। सरदगा बाज के अक्सर काट
जाते हैं ।। जो कहते हैं वो करते हैं पूरे नर ।। चाहे इसमें हो-
जाय कलम धड़ से सर ।। मैं कहूं किसी से कोल तू झूठा मुनकर
।। जो कहके सखुन को नहीं करें वो हैं खर ।। जो झूट बोलते हैं वो
फिरते दर दर ।। कहे सत्य बचन बलि बिक्रम राजा गये नर ।। जो
कायर हैं यो रण से हट जाते हैं ।। सरदगा बाज के अक्सर काट
जाते हैं ।।५।। जो कलाम पर अपने रहते हैं साकरा ।। तो ला क-
लाम वह रपाल का मिलता आकर ।। मत झूठ किसी से बोलय
हे नर तन पाकर ।। सब बुरा कहेंगे कहूं तुझे समझा कर ।। जो
करेदगा अपने घर बुला कर ।। लै उनको बदला साईं उनसे आ

कार॥ नहीं मिले हम्मारत तक जब दिल फट जाते हैं॥ सर्दगा बाज़ के अक्सर कट जाते हैं॥२॥ पूरों का सखुन नहीं लाखों में टलता है॥ सर सखुन के आगे सूरों का चलता है॥ जो सच्चा है वह कुटंब से फलता है॥ उसका विराग उसके आगे बलता है॥ जो करके दगा प्यारों के तई छलता है॥ वो नरक कुंड की आतिश में जलता है॥ सच्चों के आगे झूठे घट जाते हैं॥ सरदगा बाज के अक्सर कट जाते हैं॥३॥ जो कलाम को झूठा मुखसे फरमाते हैं॥ वो अन्त समय दोजख में धक्के खाते॥ कहे दबी सिंह जो साई में लो लाते॥ हम भव सागर एक लहजे में तर जाते हैं॥ छंद महा नारायन दे का मिस्सर गाते॥ हर नाम सुमरि के सभा में चंग बजाते हैं॥ कहै बनारसी हम शखुन में डट जाते है॥ सरदगा बाज के अक्सर कट जाते है॥४॥

इस कदर इश्क में मुझे कालमल लिया॥ खागया समझ कर कन्द जहर की डलिया॥ कैस के धोखे पिया जहर का प्याला॥ ममनद को समझ खारों पर बिस्तर डाला॥ का कुल पै पहुंचा हाथ वो निकला काला॥ मन भाये के हमने भस्म आहका नाला॥ दिल धड़का तो दरिया में तपी मछलिया॥ खागया समझकर कंद जहर की डलिया॥१॥ इसलाम समझ के दीनो मजहब को छोड़ा॥ और इनाम समझ के कुफ्र से नाता जोड़ा॥ समझे थे जिसको बहुत वो निकला थोड़ा॥ इसलिये मुंह को कुल जहान से मोड़ा॥ है मेरे इश्क की असर तल बी ख़लल लिया॥ खागया समझ कर कन्द जहर की डलिया॥२॥ बस खुदा समझ के नज़र बुतों पर डाली॥ और अंजाम समझ के दिल ने आह निकाली॥ समझे थे जिसको भरा वो निकला खाली॥ जाहर करने को हुवा तो बात छिपा ली॥ मालूम

हुवा जो इश्क में थी कुलबलियां ॥ खागया समझ के कन्द
जुहर की डलियां ॥३॥ दो समझ के पाया एक एक खो बैठे ॥
लौ लगा सनम की याद में जो जो बैठे ॥ हम दुई से इस दुनियां
में हाथ धो बैठे ॥ अब तन तन्हाई में आपी आप हो बैठे ॥ सुन ब
नारसी भैरों की बात भलियां ॥ खागया समझ कर कंद जहर
की डलियां ॥४॥ वोह मज़ा मिला हमको इस मयनोशी में
॥ छुट गई वो दुनियां आपसे बेहोशी में ॥ मैने कुछ इरादा कि-
या न पीने का ॥ वो काम जो देखा मीने में मीने का ॥ था नक्शा
उसमें सदा खिचा जीने का ॥ और रंग भी उसमें खिंचा था रंगी
नेका ॥ पीते ही जुबां आई खुद खामोशी में ॥ छुट गई वो दुनि
यां आपसे बेहोशी में ॥ लेते हो जामवो अंजाम वो उसका पा
या ॥ गफलत ने होशियारी का मज़ा दिखाया ॥ जिस वक्त
नशा वो मेरी आंख में आया ॥ बन्दे से खुदा ने मुझको खुदा ब-
ताया ॥ आगया जमाना मुझे फ़रामोशी में ॥ छुट गई वो दुनि-
यां आपसे बेहोशी में ॥२॥ मौसम तो गुलाबी से न कोई आ-
ला है ॥ दिल इसी इश्क में मेरा मतवाला है ॥ चश्मों ने रंग
अब लाली पर डाला है ॥ जामे जम से बढ़ा कर मय का
प्याला है ॥ यह शखुन जबां से कहा गरम जोशी में ॥ छुट
गई यह दुनियां आपसे बेहोसी में ॥३॥ आबे हैवां में कहा
भला येह आब है ॥ दो जहां में आला सबसे बनी शराब
है ॥ वेदों पुराण कुरान का यही जबाब है ॥ आजाब न इस
को कहो यह बड़ा सबाब है ॥ पी बनारसी ने सनम की
आगोशी में ॥ छुट गई यह दुनियां आपसे बेहोशी में ॥४॥
इस जग में जब लग अपनी पार बसावै ॥ मन कोई कि
सी के द्वार मांगने जावे ॥ इस जग में मांगना यार पाप की

पेटे॥ मागन गये वलि के द्वारे राम भये छोटे॥ सुन्ना वो मांगना इवले होगये छोटे॥ मांगन की बराबर कर्म नहीं और खोटे॥ इस नरको मांगना जो चाहि कहलावे मन कोई किसी के द्वारे मांगने जावे॥१॥ मरना वेहतर यह बात भूलनहि कीजे॥ सब जाय वडप्पन वो वकर सुनलिजे॥ जप योग तपस्या पुण्य उस दम सब कीजे जब बरने मुखसे कहा कुछ हमें दीजे॥ है पूरा मौतका वक्त आंख सर मावे॥ मत कोई किसी के द्वारे मांगने जावे॥ दिल दलेल होया होवे सूरमा जीका॥ जो जाय मांगने तुरत पड़े रंग फीका॥ बाजे नहीं देते चीज नामको लीका॥ मांथे पर उसके चढ़ा कलंकी टीका॥ धृक जीवन जग में उसका वेद यों गावें॥ मतकोई किसी के द्वारे मांगने जावे॥३॥ जब गरज बन्दने अपनी शरम गमाई॥ काला मुंह करके गया मांगने भाई॥ जो होते उसके उसने राह बताई॥ उसके मुंह पर जवी चढ़ी अरसकी स्याही फिर मारा होके चूला दिल में पछितावे॥ मतकोई किसी के द्वारे मांगने जावे॥४॥ जब वक्त पड़े तो जाय मांगने जावे॥४॥ जब वक्त पड़े तो जाय मांगने सूरे॥ होजाय निमाने वड़े दिलको मगरूरे॥ जो हैंगे धनी आशना बात के पूरे॥ अपने से ज्यादा समझ उसकी जरूरे॥ पर स्वारथ को कोई विरला सीस कटवावे॥ मत कोई किसी के द्वारे मांगने जावे॥५॥ दुनिया में देना मरदों का साका है॥ देकर ग्यानी ने अंत प्रेम चाखा है॥ है बुरा मांगना वेदोंने भाखा है॥ रस लगसे मांगना काम का मनाका है॥ तू मांग देख पर विना भाग नहीं पावे॥ मतकोई

किसी के द्वारे मांगने जावै ॥६॥ मेरी अरज सुनो तुम साईं श्याम शुभ रास ॥ मत भेजो मांगने मुझे किसी के पास ॥ अपने घर से मेरी पूरी करो सब आस ॥ मीरन चुन्नुछुद का है देवी। सिंह खास ॥ मालन की मीठी बानी सभी मन भावै ॥ मत कोई किसी के द्वारे मांगने जावै ॥ ७ ॥

दम पर दम हर भज नहीं भरोसा दम का ॥ एक दम में निकल जावेगा दम आदम का ॥ दम में दम है जब तलक सुमिर हर हर तू ॥ दम आवै न आवै इसकी आसमत करतू ॥ एक नाम साईं का जप हिरदे में धर तू ॥ नूर इसी नाम से तर जा भव सागर तू ॥ बल करता थोड़े जीने खातर तू ॥ वोह साहब जल्लाद जरा तो डर तू ॥ वहां अदल बड़ा है हिसाब हो दम दम का ॥ एक दम में निकल जावेगा दम आदम का ॥ १ ॥ जीने का फल यह राम नाम जपना है ॥ जब घेर काल तो कहां जाय छिपना है ॥ इस नर को एक दिन आतिश में तपना है ॥ जाय दम निकल तन मिट्टी में खपना है ॥ एक दम का बसेरा दुनियां रैन सुपना है ॥ टुक देखो आंखें खोल कौन अपना है ॥ सब झूठा माया मोह कुटुंम हम दम का ॥ एक दम में निकल जावेगा दम आदम का ॥ २ ॥ जो आया जग में अमर नहीं रहने का ॥ नर्मदा घाघरा अटक नहीं बहने का ॥ करलो खजतन तू माया के गहने का ॥ पर मिले वही जो तेरे है लहने का ॥ हर वक्त कभी नहीं जम के दंड भरने का ॥ करने की कोई बुरा नहीं कहने का ॥ है इस जग में नाता हैगा बोलते दम का ॥ एक दम में निकल जावेगा दम आदम का ॥ ३ ॥ जो पैदा हुआ है आखर

मरना होगा ॥ बिन भजन किये हरगिज नहीं तरना हो-
गा ॥ जब वोरू पाप का सिर धरना होगा ॥ क्योंकर सागर
के पार उतरना होगा ॥ भुगतेगा चौरासी दुख भरना होगा
॥ उस दम प्यारे नहीं राम सुमिरण होगा ॥ है कौन रोकने
वाला जाने दमका ॥ एक दम में निकल जावेगा दम आद
मका ॥ ४ ॥ एक दम में निकल जावेगा दम आदमका
॥ फिर पीछे हाथ मल के पछितावेगा ॥ जब साईं स्याम
की चरण सरण आवेगा ॥ कहै मीरन चुन्नु जभी मुक्त
पावेगा ॥ सुन देवी सिंह जो हर के गुण गावेगा ॥ वो प्रा-
णी जब बंधन से छुट जावेगा ॥ कुछ कयाम जग में नहीं
समझ इस दमका ॥ एक दम में निकल जावेगा दम आ-
दमका ॥ ५ ॥

इस कलयुग में कल देगा कल पावेगा ॥ कल
पावेगा वो: क्योंकर कल्पावेगा ॥ नरदेही पाकर ध्यान
साईं का धरना ॥ दो दिन का जीना देख है अन्त है मरना ॥
तज बुरे काम सागर के पार उतरना ॥ दुख देगा तुझको
भी दुख भरना होगा ॥ नेकी का भजा नेकी का नेकी करना ॥
मत करै बदी की बात खुदी से डरना ॥ करनी का फल सं
सार सकल पावेगा ॥ कल पावेगा वो क्योंकर कल्पावेगा ॥
॥ १ ॥ क्या गफलत में रहै भूल उसे पहचानो ॥ मत बुरा कि
सी का करना दिल पर ठानो ॥ मैं कहौ बात न सी हत की
भवें नानों ॥ अब करो भलाई आगे खाक मत छानो ॥
यह कलजुग नहीं इस को करजुग कर जानो ॥ यहां
मिले हाथ सच्च कर मानो ॥ जो आज करैगा वैसा कल्पा
वैगा ॥ कल पावेगा ॥ वह क्योंकर कल पावेगा ॥ २ ॥ जो करै

किसीकी मुसकिलको आसान उसकी मुशकिल आसान करें भगवान ॥ नुकसान पराया करें वो है अग्यान ॥ १
उनका नहीं रहता जगमें नाम निशान ॥ जो मिला चाहे साहब से छोड़ अभिमान ॥ पांचों इन्द्री बस करके लगावो ध्यान ॥ उस मारग की जब तू अटकल पावेगा वह क्योंकर कल पावेगा ॥ २ ॥ जो कुवा किसी की १
खातिर खोदे भाई ॥ हो उसके वास्ते त्यार अरसतें खाई गुलन कर पराया और चिराग़ और सौ दाई ॥ रही उस की रोशनी जिसने इधर लौ लाई ॥ कर साध संत की टहल तो मिले भलाई ॥ की जिसने खिजमत उसने अजमत पाई ॥ जो सेवा करेगा मेवा नुकल पावेगा ॥ कल पावेगा वह क्योंकर कल्पावेगा ॥ ४ ॥ तपकेल जुग का है वड़ा राज कमाया ॥ किया ऐसा अदल जुल्मी नहिं रहने पाया ॥ वोह मिटा तुरत जिसने जिसको सताया ॥ मैसा फलती है जब से कलयुग आया ॥ मीरन चुम्नू की देवी सिंह पर छाया ॥ यह कहै भवानी सिंह ज्ञान गुन गाया ॥ उस मारग की जब तू अटकल पावेगा ॥ कल्पावेगा वह क्योंकर कल्पावेगा ॥ ५ ॥

घर मिले उसे जो अपना घर खोवे है ॥ जो घर रक्खे वो घर घर में रोवे है ॥ जो राज़ तपै वो महा राज कर्त्ता है ॥ और ज्ञान तपै सो कभी नहीं मरता है ॥ सुख त्यागे तो वह और का दुख हरता है ॥ धन तजै तो फिर दौलत घर भरता है । जो पलंग तजै वह फूलों पर सोवे हैं ॥ जो घर रक्खे वो घर घर में रोवे है ॥ १ ॥ जो परदारा को तजै तो पावै रानी ॥ और झूठ वचन दे छोड़ सिद्ध होय बानी ॥ जो दुर्बुद्धी को तजै

वोही होग्यानी ॥ मन सात्यागे तो मिलै ऋद्धि मन मानी ॥ जो सर्व तजै वो उसको सब कुछ होवै है ॥ घर जो रक्खे वो घर घर में रोवै है ॥ २ ॥ जो कुछ इच्छा नहीं करे इच्छा पावे ॥ और स्वाद तजै तो अमृत भोजन खावै ॥ नहीं मांगे तो फल पावै जो मन भावे ॥ है त्याग में तीनों लोक वेद यों गावै ॥ जो मैला होके रहै वो दिल धोवै है ॥ जो घर रक्खे वो घर घर रोवै है ॥ जो पक्षवाद को तजै वो सब को जीते ॥ और काम तजै तो होय काम मनचीते ॥ कहें देवी सिंह हम राम जिन्होंने लीते ॥ उनको गोबिन्द ने ब्रह्म लोक पुर दीने ॥ अब बनारसी घर खोके ब्रह्म होई है ॥ जो घर रक्खे वो घर घर में रोवै है ॥ ४ ॥ ० ॥ अस्तुति ॥ ० ॥

करदास दया के कष्ट हरो गिरधारी ॥ करुणा निधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥ सब संकट मेरे दूर करो अब स्वामी ॥ रिद्ध सिद्ध से मुझे भरपूर करो अब स्वामी अपने तुम मुझे हजूर करो अब स्वामी ॥ चरणों के मेरे तईं दूर करो अब स्वामी ॥ हर काम तो मेरा जरूर करो अब स्वामी ॥ भक्तों में मुझे मशहूर करो अब स्वामी ॥ हो निर्भय पूरण ब्रह्म आप वोह अवतारी ॥ करुणा निधि करुणा निधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥ १ ॥ सब संतों को पापी तुमने तारा है ॥ पाइस गजराज को तुम्हीं ने उभारा है ॥ प्रहलाद की खातिर नृसिंह तन धारा है ॥ नख से नाभी को चीर असुर मारा है ॥ मुझको तो नाम श्री नारायण प्यारा है ॥ प्रभु तेरे बिन अब कोई नहीं भारा है ॥ क्यों मेरे वास्ते देर करी बनवारी ॥ करुणा निधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ॥ २ ॥ पांचों पंडों का संग कियाहै

तुमने ।। ब्रजमें सखियन से रंग किया है तुमने ।। कालीके नाथ के नंग किया है तुमने ।। कंसासे जाय फिर जंग किया है तुमने ।। हरेक राक्षस को दंग किया है तुमने ।। सब असुरों का चौरंग किया है तुमने ।। अब मेरे पांच भूतों को मार मुरारी ।। करुणा निधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ।। ३ ।। कसूर मेरा माफ आप अब कीजे ।। सिर चरणों में अपने मेरा धर लीजे ।। यह उम्र सदा दिन रात हर घड़ी छीजे ।। करमे हर प्रभु कुछ भक्ति आपनी दीजै ।। एक अरजी मेरी गरीब सुन लीजे ।। दिल भक्ति मैं तुम्हरी सदा हमारा भीजै ।। हरी हरलो तन की पीर कृष्ण दुख भारी ।। करुणा निधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ।। ४ ।। तुम जो चाहो सो आप करो यदु राई ।। राई से गिर कर देते गिर से राई ।। है सत्य सत्य सांची तेरी प्रभुताई ।। तरगया वोही जिसने तुमसे लौ लाई ।। कहै देवी सिंह जिन तुम्हारी महिमा गाई ।। वो: भव सागर के पार उतर गया भाई ।। कहै बनारसी अब रखो यह लाज हमारी ।। करुणा निधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ।। ५ ।।

अथ पन घट लीला

आज बंसरी बजावै वह जमुना पर खड़ा नागर नटरी छोड़ कपटरी तू कर दर्शन कर बंशी बटरी ।। केसर भाल विशाल लाल ने सजे साज पीले पटरी ।। मोर मुकट री धरे सिर चलें चाल वह लटपटरी ।। कानन कुंडल जगमगात बाजत किंकिन अद्भुत कटरी ।। चल अब झटरी छोड़ दे पर आंगन अपनी अटरी ।। गृह का काज और लाज आजन सास ननद से तू नटरी ।। छोड़ कपटरी तू कर दर्शन

चलकर बंशी बटरी ॥ १ ॥ ग्वालवाल गोपाल सजे और तू अपनी सखियां टटरी ॥ लेकर घटरी चलो सब इसी त हाने पन घटरी ॥ वो अंतरा जामी है व्यापक कृष्ण चंद्र सब घटरी ॥ तू मन घटरी नाम हिरदे में रख उन का रटरी ॥ कातिक की मावस है आज मन पूज दिवाली की हटरी ॥ छोड़ कपटरी तू कर दर्शन चलकर बंसी बटरी ॥ २ ॥ आज राति को बसो वहां जहां शीतल साया है बटरी ॥ पठवो पटरी कि जिसमें मिलें तुझे वो नटसटरी ॥ भूषण अपनो दिव्य और बना पहिन पांव में अन बटरी ॥ छोड के लटरी तू अपना रूप दिखा उनंको म्हटरी ॥ ऐसी मोहनी डार मोहले मोहन को अब झटपटरी ॥ छोड़ कपटरी तू कर दर्शन चलकर बंशी बटरी ॥ ३ ॥ नाम सुधारस है उनका ल पीव उसे तू गटपटरी ॥ लोभ से छटरी और माया मोह इन्हें जटरी ॥ बनारसी यह कहे जाय कर नंदलाल से तू सटरी भक्त से फटरी ॥ छोड दे सब दुनियां की खटखटरी ॥ बार बार में कहूं अरी राधे तू नाम हरि का रटरी ॥ छोड़ कपटरी तू कर दर्शन चल कर बंशी बटरी ॥ ४ ॥

अथ मान लीला

भीन में अपनी श्रीकृष्ण सोलहों कला सब भूलगये श्रीराधे गई रूठ तो अपनी अकल ललासब भूलगये ॥ हुए प्रेम बस ऐसे जैसे जल बिन मीन में जान नहीं ॥ इ सीतरह से श्री राधे बिन कृष्ण के तन में प्राण नहीं ॥ मन अटका राधा से उन का शरीर में कुछ ध्यान नहीं ॥ ऐसे व्याकुल देह धारि कर कभी हुए भगवान नहीं ॥ जिस बुद्धि से वामन बनि के बलि को छला सब भूलगये ॥ श्री-

राधे गई रूठ तो अपनी अक्क लला सब भूलगये ॥१॥ भूलगये बसरी और मुरली की तान सब भूल गये ॥ जादू टोना तंत्र मंत्र और ग्यान ध्यान सब भूलगये ॥ दूध दही माखन मिसरी हरि खान पान सब भूलगये ॥ नेमधर्म हित व्रत संजम भगवान मान सब भूलगये ॥ त्रैलोकिनाथ निरंजन बुरा भला सब भूलगये ॥ श्री राधे गई रूठ तो अपनी अक्क लला सब भूलगये ॥२॥ और तो सब गये भूल प्रेम में एक बात फिर याद आई ॥ पुरुष रूपको तजे बने नारी अपनी छबि दिखलाई ॥ लगे गाबन तान गये राधे के द्वारपर यदुराई ॥ सब सखियों ने देखा हरकी गति मनि सब अब बौराई ॥ बहुत मान करते थे प्रभुपद आज भला सब भूलगये ॥३॥ श्री राधे गई रूठ तो अपनी अक्क लला सब भूलगये ॥३॥ बहुत हुए बेचैन पड़े नहीं चैन चैन सब भूलगये ॥ मुंहसे निकले बात न हरगिज मधुर बैन सब भूलगये ॥ रोज चराते थे गैयां केआज धेनु सब भूल गये ॥ हरकको लेते थे ढकपर आज कहिन सब भूलगये ॥ बड़े दुष्टों का दल एक पल में दला सब भूले सब गये ॥ श्री राधे गई रूठ तो अपनी अकल लला सब भूलगये ॥४॥ कहाजाय सखियों ने राधे से आई एक ब्रजनारी ॥ खूबगावती राम रूप सांवला नाम सावर प्यारी ॥ बुला लिया राधे ने रूठपट करी रहस की तैयारी ॥ रहे रातभर कष्ण वहां तब खुला बेद गिरधारी ॥ बनारसी कहे बिरह बिथा का तुक्क टला सब भूलगये ॥ श्रीराधेगई रूठ अपनी तब अकल लूलला सब भूलगये ॥५॥

अथ गद लीला राग सोरठ

जमुना के निकट गिरधारी ॥ खेलें गेंद पी कृष्ण मुरा
री ॥ जग द्वापर के दरमियाने ॥ था कंस बड़ा बलवाने
किये बहुत हा जुल्म तुफाने ॥ सब लगी धरती अकु
लाने ॥ कंस राय से नारद मुनि ने कहा सुनो अहवाल ॥
सुनी खबर नंदा ने कंस घर भेजा हुक्म दर हाल ॥ कहा
मंगा वो कमल कमल फूल नहि मार करी पैमाल ॥
॥ दोहा ॥ सुनी खबर जब कंस ने वोह दिल में घबरा
या ॥ मात जसोदा की आंखो में आंसू भर आये ॥ ९
हुवा उन्हें बहुत दुख भारी ॥ खेलें गेंद कृष्ण मुरारी
॥ १ ॥ यह खबर नंद सुन पाते ॥ तो दिल में बहुत घब
राते ॥ नहीं अन पानी कुछ खाते ॥ देखो मोहन घर में
आते ॥ आके कृष्णा ने कहा पिता कुछ दम को बतला
ओ ॥ क्या ऐसा दुख पड़ा जो तुम आंखिन आंसू लाओ
॥ कहा नंद ने सुनो पुत्र तुम खेलो और खाओ ॥ ग्वालन
के संग में जाकर अपना मन बहलाओ ॥ दोहा ॥ बहुत
कृष्ण ने हट करी तुम देखो तात बतलाय ॥ छोटे छोटे
पैरों से वोह बैठ गोद में आय ॥ करें बात पिता संग प्या
री ॥ खेलें गेंद कृष्ण मुरारी ॥ २ ॥ कहें कृष्ण पिता संग
बातें ॥ क्यों हमें नहीं बतलाते ॥ हम अभी काम कर लाते
॥ जो तुम दिल में हो चाहते ॥ कहा नंद ने सुनो पुत्र कंस
का हुक्म आया ॥ शिव पूजन को फूल कमल का उसने
मंगवाया ॥ काली दह में कमल फूल नाग खूब छाया ॥
तुम कैसे लाओगे वहां है भुजंग की माया ॥ दोहा ॥
इतना सुनकर कृष्ण जी मन में मुसकाये ॥ घर से नि
कल ग्वालों को अपने साथ में लाये ॥ ये उनके जो हित

कारी ॥ खेलें गेंद कृष्ण मुरारी ॥ सब आये ग्वाल और बाला ॥ यों कहें उनसे गोपाला ॥ एक खेल यह नया निकाला ॥ कहैं सखा कहो नंद लाला ॥ मंगाके कपड़ा श्रीकृष्ण ने किया गेंद तैयार ॥ लगाये हीरे लाल जवाहर मोतिन की बाहार ॥ सीस मुकट कानों में कुंडल गलफूलों के हार ॥ कालिंद्री तट गेंद खेलते कृष्ण कृष्ण के यार ॥ दोहा ॥ खेलत खेलत कृष्ण ने लिया वो गेंद उठाय ॥ फेंक दई जब जोर से गिरी कालिंद्री में जाय ॥ झट कूद पड़े बनवारी ॥ खेलें गेंद कृष्ण मुरारी ॥ ४ ॥ जब कूद पड़े यदुराई मारी खलकत देखन धाई ॥ करैं विलाप जसोदा माई ॥ खड़े रोवे लोग लुगाई ॥ कालिंदी के जल ऊपर एक हार नज़र आया ॥ कही शंख कहीं चक्र कृष्ण का ग्वालों ने पाया ॥ मात जसोदा ने ले हार को गले से लगाया ॥ ऐसा किया बिलाप कि धरती आकाश थर्राया ॥ दो० ॥ गौबछड़े नहीं खाय घास और नहीं पिये पानी ॥ खग पक्षी व्याकुल भये सब ऋषी अकुलानी ॥ ये ब्रज के कहां विहारी ॥ खेलें गेंद कृष्ण मुरारी ॥ ५ ॥ वहां गये कृष्ण भगवानं ॥ जहां काली का मकानं ॥ देखि नागिन धर ध्यानं ॥ यह है लड़का सुरग्यानं ॥ कहती नागिन ये बालक तू यहां क्यों कर आया ॥ क्या तुझ को कुछ नहीं है भय या तेरा काल लाया ॥ अब भी यहां से जा तू भाग के तुझ को समझाया ॥ तुझे देख के मेरे दिल में बड़ा तरस खाया ॥ दो० ॥ बार बार मैं समझाती हूं औ तू यहां से भाग ॥ एक सहंस्र के बीच मेरा कंथ उठेगा नाग ॥ वो हैगा बड़ा विष धारी ॥ खेलें गेंद कृष्ण मुरारी ॥ ६ ॥ कहैं कृष्ण एरी सुन नागनी दे अपने कंथ को जागन ॥ राजी

कंसने भेजी पूतना उसके तईं मारा ॥ अकावका सुरदानों
को एक पलमें सहारा ॥ मैं आया हूं नाग को नाथन । नहीं
आया भागन । लङ्का का रावण राजा सो त्रेता में हारा ॥ इं-
द्र का सब अभिमान घटाया नख पर गिरवरधारा ॥ दो० ॥
तेरा नाग क्या माल है मैं पलमें लूंगा नाथ ॥ कमल फूल दल
वाय केले चलूंगा अपने साथ । देखो वो कैसा बलकारी ॥
खेलें गेंद कृष्ण मुरारी ॥ ७ ॥ फिर नागिन् कहती हरसे ॥ तू
लड़के आया घरसे ॥ तुझे देख मेरा जी तरसे ॥ तू नहीं डरता
इस डरसे ॥ बहोत तरह से नागिन कैसा मन मोहन को समझा-
वे ॥ श्रीकृष्ण नहीं उसकी बात कुछ खातिर में लावें ॥ सुन
के ज्वाब मन मोहन के नागिन गुस्सा खाये ॥ जाके कथ के पा-
स नागिन बहुत चिल्लाये ॥ दो० ॥ एक लड़का आया यहां यह
देखा अभी नादान बड़ी देरसे अड़ा खड़ा और करता है अभिमान
॥ है अपना जी उसे भारी ॥ खेलें गेंद कृष्न मुरारी ॥ ८ ॥ नागिन
ने नाग जगाया वो उठकर बाहेर फलाया ॥ लड़ने को कृष्ण से
आया ॥ विषका वार एक चलाया ॥ मारी जहर की फुंक कारी ॥ ह-
वा जमुना जल नीला ॥ श्याम वरण होगये कृश्न जब बासुक को
कीला ॥ सारे फन नाथे और उसको और बहुत किया ढीला ॥ क-
मल फूल ले कर भुजों ने बीउस पर खीला ॥ दो० ॥ मन मोहन
महाराज जी मैं हूं बांदी तेरा ॥ देउं सुहाग जाउं बलिहारी ॥ खे-
लें गेंद कृष्ण मुरारी ॥ ९ ॥ जब नाग नाथ लिया हरने ॥ लगे
फन पर निरत का करने ॥ नागन ने पकड़े चरने ॥ कहा कृ-
ष्ण मैं तेरी शरने ॥ कहा कृश्न मैं तेरी शरने ॥ हाथ जोड़ कर करें
अरज एक मेरी सुन लीजे ॥ मन मोहन महाराज मेरा वर सुहाग
दे दीजे ॥ दासी जान कर अपनी हरि मुझ पर ठो कृपा कीजे ॥ ब-

इत अधीनी देखनारिकों जदुहरियसीजे ॥०॥ दोहा ॥०॥
कहैं कृष्न सुन नागिनी मैं दूंगा तुम्हें सुहाग ॥ तेरे और
तेरे कंत के आज उदय हुये हैं भाग ॥ तेरी गई अब बाधा मा
री ॥ खेलें गेंद कृष्न मुरारी ॥१०॥ लाये नाग नाथ गोकुल
में ॥ दिये फूल नंद को पलमें था खड़ा नाग वो जलमें ॥
कहैं कृष्न जा अपने थलमें ॥ हाथ बांध कर नाग बात यह
मुख से बन लाया ॥ मन मोहन महाराज वहां मैं रहने नहीं
पाता ॥ जहां प्रथम मैं रहता था वहां गरुड़ राज आता ॥ मुझे
और मेरी नागिन को डर अपना दिखलाता ॥ दोहा ॥०
श्री कृष्नने नाग के देके मस्तक पर पाव ॥ उसी रोज से-
नाग वह जपे कृष्न का नाम ॥ हैं कृष्न बड़े अवतारी ॥ खे
लें गेंद कृष्न मुरारी ॥ ११ ॥ जब गोकुल में हरि आये ॥ और
फूल कमल के लाये ॥ सब ग्वाल बाल हुलसाये ॥ मिलने
को कृष्न से धाये ॥ मान जसोदा के घरमें बजे आनंद बधाये
घर घर होरही खुशी खबरें कंस ने सुपनाई ॥ दिया हुकम
दावानल अग्नि कंसने भिजवाई ॥ जमुना के वह तीर आग
सब हीनी फैलाई ॥ दोहा ॥ श्री कृष्न ने अग्नि को लिया रख
अपने मुखमें ॥ ग्वाल बाल और सखा सखी सब सोय रहे-
सुख में ॥ होगई वो रैन अंधियारी ॥ खेलें गेंद कृष्न मुरारी
॥ १२ ॥ जब घर आये जदुराई ॥ भई खुशी जसोदा माई ॥
श्री कृष्न की अस्तुति गाई ॥ जिनकी सारी प्रभुताई ॥०
देवी सिंह आधीन कृष्ण तुम्हरी महिमा गाई ॥ आठ पहर
दिन रात नाम तुम्हरा ही मन भाता ॥ भद्रा नरायण टेका
मिस्सर सदा शरण आता ॥ रख इस जग में लाज कृष्न जी
यही मैं चाहता ॥ दोहा ॥ बनारसी यह गावता मोहनी की

लीला ॥ मोर मुकुट मुरली सोहै और पीताम्बर पीला ॥
धुनि मन्नू ने लल कारी ॥ खेलें गेंद द्वारा मुरारी ॥ १३ ॥

महायोगनी ॥

मैं सत्य सत्य कहूं हाल सुनो अहवाल तन का व्यान ॥
है ॥ ब्रह्मांड में बादशाह ब्रह्म सोई आदिज्योति भगवान ॥
जहां महां तत्व है पवन करो तुम श्रवन सोई है शक्ति रहै पा
रब्रह्म के संग वोही अंग बात कहूं सत्य ॥ है सीस में श्रीमहा
देव उन्ही को सेव करो तुम भक्त ॥ है वही ब्रह्म के खवास-
हाजिर रहैं यहां हरवक्त ॥ सुन प्यारे जहां तरह तरह के राग
रंग होते हैं ॥ सुन प्यारे उस बादशाह के सभी संग होते हैं द्रोप
दी ॥ हैं चार जो उसके वज़ीर उनका जुदा जुदा सुनो नाम ॥ ब्रह्म
और बिस्नु वह रुद्र करें सिद्धि गणेश पूरण काम ॥ यह अग
म अगोचर छन्द बड़ा आनन्द ज्ञान विज्ञान ॥ है ब्रह्मांड में बा
दशाह ब्रह्म सोई आदि ज्योति भगवान ॥ १ ॥ दो नयन हैं चौ
की दार बड़े हुशियार फिरें दिन रात ॥ हैं खबर दार दो कान
इधर ध्यान खबर ले जात ॥ नासिका कामिनी दो इलिये खु
शबोई पुष्प और रात ॥ वह ब्रह्म करै सब भोग कही यह म-
हायोग की बात ॥ सुन प्यारे यह जिव्हा पढ़के सब का हाल
सुनावे ॥ सुन प्यारे और कंठ गंधर्व राग रागनी गावे ॥ द्रोपदी
॥ हैं मुख में बत्तिस दांत सोई है हीरा मोती लाल ॥ वह ब्रह्म
पहन के सुन्दर भूषण सदा रहै खुशहाल ॥ दिल दलेल रह-
ना संग करै वो जंग जुद्ध घमसान ॥ है ब्रह्मांड में बादशाह
ब्रह्म सोई आदि ज्योति भगवान ॥ २ ॥ पढ़ मुख में चारों वे-
द खोल दिया भेद सो चारो धाम ॥ ऋग वेद है वही नाथ ॥
और श्री काशम्नाथ हैं ॥ स्याम ॥ तीसरा अथर्वन वेद न

कार निषेध भजो हरिनाम सोई जगन्नाथ रमरहे गुनीज नलहे सिद्धि होकाम ॥ सुन प्यारे है यजुर्वेद में बनी-द्वार का पुरी ॥ सुनप्यारे कहूं अलख निरंजन छोड़ो-वाने बुरी ॥ द्रोपदी ॥

मन घोड़े पर असवारी करता ब्रह्मवादशाह राजा ॥ हिरदे हाथी को पारब्रह्म ने खूब तरह से साजा ॥ हमदीवान दफ्तर दारबड़ा पुरकारज्ञानी की खान ॥ है ब्रह्मांडमें वादशाह ब्रह्म सोई आदज्योति भगवान ॥१॥ है तरह तरह के महल और सुंदर पहल हीरें जड़े ॥ और सत्तर दो बहत्तर खाने नौ दरवाजे खडे ॥ दशवी खिड़की में आप रहा व व्याप शब्द धुनि गड़े ॥ बजेनाद वीन और सरव आपनि स निसरवर हे निछड़े ॥ सुनप्यारे है सीसमहलमें आदि ब्रह्मका सा ॥ सुनप्यारे अपनी इच्छा कर उसने जक्त मकाशा ॥ दो०॥ वो पल्पर है आप और नहीं कोई उस्से परे ॥ वोह अव्यय अविनासी ॥ सन्यासी नहीं जनमें नहीं मरे ॥ है मुक्त उसी के उक्त से किया नाम निसान ॥ है ब्रह्मांडसें वादशाह ब्रह्म सोई आदि ज्योति भगवान ॥ है पांच तत्व का लखल बनो शुभ भक्त तीन पुरा गुण ॥ सब है माया का खेल उसी में मेल निरंजन करा लेनज ताज कोई आप जगदीश सी भपर धरा ॥ जो धरना उसका ध्यान ज्ञानसे भवसागर तरा ॥ सुन प्यारे रही कलगी की कलगी झलक फलक मेदनी ॥ सुनप्यारे उस पार ब्रह्म अगम्ज्योति हैदूनी ॥ द्रोपदी ॥ तन तख्त के ऊपर बैठा बादशाह करे अदल इन्साफ ॥ चाहे जिसको देसजा करे वो चाहे जिसको साफ ॥ हरिनिराकार निरधार वो अपरंपार उसे पहचान है ब्रह्मांडमें बादशाह ब्रह्म सोई आदि ज्योति भगवान ॥४॥

सब रूम रूम है फौज कर रही मौज़ कदे और घटे ॥ कोई पी
के को हद जाय कोई बद जाय कोई जा चढ़े ॥ है दोनों हाथ हथि
यार करें सब कार हरी नि गटे ॥ और शब्द नकारा चोबदार चि
न नाम न की षपटे ॥ सुन प्यारे यह फिक्र फकीरी पार ब्रह्म से
भांग ॥ सुन प्यारे न भी मैं से रहै भरा कमल सब लागे ॥ द्रोपदी
॥ बिन लिंग पैदा कारे ॥ सकल संसार ब्रह्म ब्रह्म चारी ॥ वो
आपी आप है एक नहीं वो पुरुष नहीं वो नारी ॥ है हलकारे दो
दो पाँव भजें हरि नाम यह षेनी जान ॥ है ब्रह्मांड में बादशाह
ब्रह्म सोई आदि ज्योति भगवान ॥ नां त्र मत ॥

पीउ वारुणी ब्रह्मा ने पी विश्नु ने पी और शिव ने पी विन पि-
ये तू जियेमा क्यों कर पीव इसे तो ब्रह्म जी ॥ प्रेम पात्र में भर कर
इसको मंत्र से अपने सोधकर ॥ अर्पण कर भगवती से को दि
न से हरदम मुख से कहो हर हर ॥ अमृत इसके तुल्य नहीं तू घट
में अपने इसी को भर ॥ यह मद रामद दूर करै और कामक्रोध
भागे डर डर ॥ मोह लोभ से छूट अपूर्व पीव इसे रहा सदा सु
खी ॥ विन पीयेगा तू क्यों कर पीव इसे तो ब्रह्म होजी ॥ १ ॥ ऋ-
षियों ने पी मुनियों ने पी और देवतों न धारी ॥ इन्द्र ने पी और कुवे
र ने पी जो है हरि के भंडारी ॥ बलदाऊ ने प्रगट करी और गुप्त पि-
ये थे गिरधारी ॥ वेद ने पी और पुराण ने पी हम हैं अधिकारी ॥
जो कोई इसको पिये तो क्यों कर पीव इसे तो ब्रह्म होजी ॥ २ ॥ ब-
ड़ा पर्व वारुणी का है जो करे वारुणी कुछ पान ॥ इसको जानो
महा वारुणी में यह करना है असनान ॥ आसन मुद्रा और समा
धी लगाके जो कोई करता ध्यान ॥ जीवन मुक्त होय वह प्राणी
वेद शास्त्र यह कहै पुरान ॥ बड़े बड़े सिद्धों ने इसको धारण
कर पाई मुक्ती ॥ बिन पिये तू जियेगा क्यों कर पीव इसे तो ब्रह्म

होजी ॥ ३ ॥ यह कारण है मोक्ष का इस को पिये तो होवे ब्रह्म में लै ॥ बड़ा तीरथ है यही कि इसमें किसी तरह का नहीं है भय ॥ शुद्ध आत्मा यही करै और जग शब्द में पावै जय ॥ रामचंद्र ने धारण करके रावण को कर डाला ॥ बनारसी यह कहै मेरी लौ इसी से तो अब रहै लगी ॥ बिन पिये तू जियेगा क्या कर पी वह से तो ब्रह्म होजी ॥४॥

गुल में बेष और बेष में टहनी टहनी में है जलवे गुल ॥ गुल में इत्र इत्र में खुशबू खुशबू में फल लगे हैं कुल ॥ खुल में खालिक खालिक में दिल दिल में मेरे बाग इरम ॥ बागे इरम में शजर शजर में शाखा सब्जे में शबनम ॥ शबनम में शरदी शरदी में हवा हवा में हरेक किसम ॥ किस्म किस्म में बर्ग बर्ग में सबी रंग रंग में वो हम ॥ हम में नक़द शान कश में नकशा नकशे में शकलें संबुल ॥ गुल में इत्र इत्र में खुशबू खुशबू में फल लगे हैं कुल ॥१॥ संबुल में नरमी नरमी में लचक लचक में पेच पड़े ॥ पेच में जाल और जाल में जाली में इल्मास जड़े ॥ इल्मासों में लाल लाल में मन मन में हैं मोती बड़े ॥ बड़े बाग़ में सहन सहन में नहर नहर में सर्व खड़े ॥ खड़े सरव में मोर मोर में कुमरी कुमरी में संबुल ॥ गुल में इत्र इत्र में खुशबू खुशबू में फल लगे हैं कुल ॥२॥ बुल बुल में है चहक चहक में सदा सदा में राग और रंग ॥ राग और रंग में सुर और सुर में ताल ताल में अजब तरंग ॥ तरंग में लहर लहर में बहर बहर में जमाना गंग ॥ गंग में लहर में बादशाह बादशाह में अजब तरंग ॥ तरंग में बजै बीन में तार में सम बिलकुल ॥ गुल में इत्र में खुशबू खुशबू में फल लगे हैं कुल ॥३॥ बिलकुल में है खुदा खुदा में खुदी खुदी में गुल गुलशान ॥ गुलशान में गुलरू गुलरू में हुस्न हुस्न में बनाव मन॥

चमनमें लाला लालमें लाली लालीमें है अजब चमन।। फबन में फूले कमल कमल में कंचन कंचनमें ब्रह्म किरन।। किरनमें काशी गिरकाशी गिरमें बहुदन बहुदनमें है मुल।। गुलमें इत्र इत्रमें खुशबु खुशबुमें फल लगे हैं कुल।।४।। इक दरख्त है ऐसा उसकी शाख शाखमें न्यारे फूल।। किसी साखमें लगे हैं सेव किसीमें सीता फल।। किसी शाखमें लगे हुए महतूत कहीं पर सुपश्यारी।। किसी जगह पर करें संतरे सरीफे सरदारी।। कहीं लगे अंजीर कहीं अंगुरकी होरही छबि न्यारी।। किसी शाखमें लगे अनार बड़े भारी भारी।। कोई डालीमें अननास अमरूदकी होरही तैयारी।। किसी जगह पर लगे अखरोट और आडू सरकारी कहीं फल रहे आंवला कहीं लटकाते हैं करहल।। किसी शाखमें लगे हैं सेव किसीमें सीताफल।।१।। किसी शाखमें लगे अलूचे कहीं पर आलूबुखारे।। बिहीबेदाना कहीं परबेर फले न्यारे न्यारे।। कोई डालीमें लगे हुए बादाम बेल प्यारे प्यारे।। बटंक मूल के उसी दरखतमें अदभूत जैसे मिनारे।। गुलाबफल फल रहे कहीं पर गूलर फल रहे बिचारे।। हमने देखा हो दरख्त उसमें फल सारे।। कहीं फालसे फले और फूले फूले कहीं फल रहे हैं नारियल।। किसी शाखमें लगे हैं सेव किसीमें सीताफल।।२।। कहीं पे नेवजा कहीं पे नीबू कहीं नासपाती की बहार।। कहीं नारंगी कहीं पर नीबू फल की लगी कतार।। किसी साखमें पेठा फल रहा कहीं पर बिल्ला बिना शुमार।। कहीं परजाय फल और जामुनि जंभीरी कर रही सिंगार।। खिरनी खट्टा फला कहीं परखजूर फल रही भुमके दार।। कहीं खुबानी लटकती निमका नहीं कुछ बारापार।। कहीं गोंदनी लगी कहीं पर

षरुमरुमेमलगल ॥ किसी शाखमें लगे हैं सेव किसी में सीता फल ॥३॥ कहीं चिरोंजी लगी कहीं पर चकोतरा लदके आला ॥ कहीं मुनक्का और मीठा फलाहुवा डाली डाला ॥ केला कमरख बादम कादोंरी किसमिस है सब परवाला ॥ गौंशा व गुलस और जर्दालू में जादू डाला ॥ लोंग इलायची फली दाड़मी करेला तूंबा निरयाला ॥ वो दरख्त है अजब कि रहे एक तरह का गुल्लाला ॥ भार अदारह बनास्पाती उस दरख्त में खिले कमल ॥ किसी शाखमें लगे हैं सेव किसी में सीता फल ॥४॥ सारी स्रष्टि है फली वृक्षमें और फल रहे हैं सब मेवे ॥ भुक्ती मुक्ती हैं उसी बूटे में जो चाहें लेवे ॥ अगम भरा दरिया है उस में जो कि नाब हित से खेवे ॥ भव सागर के पार हो जाय तो वो दरशन देवे ॥ बनारसी उस दरख्त को एकांत में सेवा से सेवै ॥ क्या ताकत है कोई गरज रा भेद बलजा देवै ॥ फूले फलें और दे पदिलावे भरा रहै निशिदिन अंजल ॥ किसी शाख में लगे हैं सेव किसी में शीता फल ॥५॥

ब्रह्म बीज और त्रैगुण शाखा गुण पल्लव हैं भरे इये हम हरी हरी कर हरे जी ॥ ऊपर भूल बीच में डाली तले वृक्ष के डाला ॥ बना तन अदाय बद रंग लाल जी ॥ मन माली रखवाली कर्ता रहे सदा खुश हाल ॥ देखता रंग रंग के ताल ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह अहंकार से रहते परे हुये हम हरी हरी कर हरे जी ॥१॥ सरजीवन जल से सीचा इस निराकार देह में ॥ आनक रस्टि के ऊपर रमे जी ॥ फले फूल बदल जब अपने शील पुत्र पर स्थल में ॥ अब इस में मुक्त फूल फल जमे जी ॥ राम कृष्ण गोपाल दमोदर नारायण रम भरे ॥ हुए हम हरी हरी कर हरे जी ॥२॥ क्षिमा छाल है वृक्ष के ऊपर बैठे कुहके मोर ॥ बोलते तत्व शब्द घन घोर जी तोते मैना लाल हैं पक्षी संपूर्ण चहुं ओर ॥ मोज में अप

ने सब सरवीरजी ॥ आपी पैदा होय और वाः आपी पैदा करै ॥ हुए हमरी हरीकर हरेजी ॥३॥ परमारथ की चले पवन शीत लठंडी साया ॥ वृक्षमें अपार है माया जी ॥ नेम धरम हित चित्त संजम से इसको उपजाया ॥ आपसमें आपी आप समाया ॥ बनारसी कहै ए से छन्द को गाये सुने सो तरे हुए हम हरी हरी कर हरेजी ॥४॥

मामेरी है आदि कुमारी पिता हमारे जती ॥ वोह जीते रहे वो होगई सतीजी ॥ ब्याह हमारा हुआ नहीं और सुत उपजे हैं पांच ॥ विना जिव्हा से बेद ले वाचजी ॥ रहे शत दिन अग्नि में उनको कभी न आवे आंच ॥ नवी झूठ न बोले सांचजी ॥ उन पांचों की एक स्त्री उसकी यह हुई गती ॥ वो जीते रहे वो होगई सतीजी ॥ ॥१॥ एक मेरे पुत्रो है उसका पती न करता भोग ॥ लिया उनवा लय नसे जोगजी ॥ उस पुत्री के अनेक सुत रहे सब से बना वियोग ॥ न उसको हर्ष न उसको शोगजी ॥ अपने खसम के आगे ही जल गई इसमें झूठ नहीं रती ॥ वो जीते रहे वो होगई सतीजी ॥२॥ और मेरा एक भ्राता है वो सदा रहे खुशहाल ॥ कि उसको कभी न खावे कालजी ॥ उसके भी थी एक स्त्री सुन्दर रूप विशाल ॥ न सोई कभी पुरुष के नालजी ॥ एक दिन बैठे वे उसने भी कर ली यही मती ॥ वो जीते रहे वो होगई सती जी ॥३॥ पार-वती ने शिव के जी ने जलाया अपना अंग ॥ मचा फिर न नाम-उसके संगजी ॥ शिव ने ज्ञान ध्यान लिया हुवा रंग के बीच कुरं ग ॥ ज्ञान रहे बनारसी के संगजी ॥ मेरे ख्याल का और भेद है मनि समझो पार्वती ॥ वो जीते रहे वो होगई सती ॥ ४ ॥

बरसना गद्दी पर नूरे ॥ कलयुग में एक फकीर बाबा

नानक शाह पूरे ॥ धरो गुरू नानक का ध्याने ॥ भरें अटल भंडार तेरे और घट में शाने ॥ कि उनको तीन लोक जाने ॥ मन्था टेको सीस नवावे हिन्दु मुसल्माने ॥ लगाई पासे ॥ संतों की लेना अर्दासे ॥ गद्दी का अचल परकासे ॥ मनोरथ मनके करो पूरे ऋद्धि सिद्धि नौनिद्धि खजाने भरदो मामूरे ॥ बरसता गद्दी पर नूरे ॥ १ ॥ कि उनको धावे नरनारी ॥ जम के संकट काट करें भवसागर के पारे ॥ हुवा गुरू नानक अवतारे ॥ पीर फ़कीरों में जाहिर में उनका चमत्कारे ॥ तजा संयोगे ॥ किया पूरी जुक्त से जोगे ॥ लगे मोहन भोगे ॥ थिरकती इन्द्र की वी हूरे ॥ दरवाज़े पर नौबत रूड़ती नित बजते है तूरे ॥ बरसता गद्दी पर नूरे ॥ २ ॥ गड़े गुरू नानक के भंडे ॥ पूरी तपस्या तपसे जिन के हाल अखंडे ॥ तेज है जग में अखंडे ॥ सात द्वीप पर महिमा की रति छाग ई-नवखंडे ॥ उन्हीं की माया ॥ करो जन अपने पर दाया ॥ दुष्ट करो चकनाचूरे ॥ सहाय हो संतों पर करो दुख दालिद्दूरे ॥ बरसता गद्दी पर नूरे ॥ ३ ॥ अजब गद्दी का परतापे ॥ ऐसा जोग जोग से इन्द्रासन कांपे ॥ पाप संताप नहीं व्यापे ॥ अलख रूप धरि आप समाये आपी में आये ॥ लगाई धुनी ॥ निर्गुण की ज्योति भये पूनी ॥ जिन सृष्टि रची बिन धूनी ॥ कला साहब के हाजूरे ॥ सात द्वीप नवखंड में रोशन उनका जाहूरे ॥ बरता गद्दी पर नूरे ॥ ४ ॥ कला नानक की है सवाई ॥ मक्के में नबी साहब को अज़मत दिखलाई ॥ गये हज करने को भाई ॥ हजरत के सिरहाने पांव करके सोग रहे जाई । मुसल्मान आये ॥ हिन्दू को देख घबराये ॥ काफिर काफिर कह धाये ॥ नबी को या यह-

मंजूरे ॥ पांवफेर मक्के की तरफ़ से किसका मक़दूरे ॥ ब
रसता गद्दी पर नूरे ॥ ५ ॥ अजब मढ़ी की तासीरे ॥ हिन्दू
गुरू करजाने माने मुसलमान पीरे ॥ दीन दोनों का जाही
रे ॥ ऐसी हुए गुरू नानक पंथी जग में फकीरे ॥ कटे सब
अपराधे ॥ चौरासी आसन साधे ॥ है इनमें जोग के याधे
भोग में आधे भरपूरे ॥ कौन कौन से आसन सब के नाम
खोलके हुरे ॥ बरसना गद्दीपर नूरे ॥ ६ ॥ कहीं गुरू नान-
क की बानी ॥ जो नर पावै सुनै छुटै जगबंधन से प्रानी ॥
भगवती प्रसन्न महारानी ॥ माईं स्याम परदयाल मार लिये
कइ एक अभिमानी ॥ जेर किये रिंदे ॥ भीरन चुनू के फन्दे ॥
कहीं देवी सिंह कड़ी बन्दे ॥ स्यान है जिनका मशहूरे ॥ क-
हारव्याल नानक शाह का सुनह ऐ हुजूरे ॥ बरसना गद्दीपर
नूरे ॥ ७ ॥ छोड़ सलतनत का गुमान कुछ बेतन सर
दारी में है ॥ खाक सार अरे दिल मज़ा खाक मारी में है ॥ श
हा को है बड़ा फिक्र सल्तनत का बदले घटते हैं ॥ कहीं ना
मारे कहीं से भागे के पीछे हटते हैं ॥ माल खजाना जमा कि
या हर जगह से दौलत खटते हैं ॥ लोभ में डूबे कभी नहीं ना
म वेर विकारटते हैं ॥ आप लड़े अरू फोज़ लड़ावें मारे का
टें काटते है ॥ तावे उम्र तक मर्दों वो धूरकी रस्सी वटते हैं ॥
शबोरोज़ हरएक वनहका दुखदुनियां दारी में है ॥ खाक
सार हो अरे दिल मजा खाक सारी में है ॥ ८ ॥ दिले रना मदुनि
यां में दिलादिलबर की इश्कियारी जो करे ॥ हरेक चश्म भर-
हे शरमासा खाकसारी जो करे ॥ रुतबा इज्जत का बुलंद ज-
हान में आशक आहुज़ारी जो करे ॥ जो चाहे सो करे दिल ९
नूवासे दिल दारी जो तुभसे में कहूं उसे तू चहेना ॥ हरदम

हरसायद उसकीयादमें रहना॥ गरफेंक देय दरियामें तुझे
तू बहना॥ और देके हाथ कोगई दावन गहना॥ होलाखब
ज़रके सदमें दिलमें दिलपर सहना॥ पर आफ कभी न-
हीं अपनी जबांसे कहना॥ जब जानूंगा मैं है आशकसा
नरतू॥ होगा उसका दीदार इश्क को कर तू॥ २॥ सुन व-
यां मेरे दिलवर की दिलदारी का॥ वोह कभी तौर नहीं
कौरे जफा कारी का॥ मिलगया मजा दमको उसकी या
रीका॥ चश्मोंमें नशा है उसी की मय प्यारी का॥ क्या हाल
कहूं मैं उसकी तरहदारी की॥ वो: गुल मालिका फूल गु-
लगुलशन क्यारी का॥ कर इश्क आशको में होजा अफ
सरतू॥ होगा इसका दीदार इश्क को करतू॥ ३॥ उस गु-
लका रोशन इस जहानमें नूर है॥ और अर्शो कुर्शके बीच
मे खिला हैजूर है॥ जिसगुलके नूरसे बने मलायक हूर है॥
उस दिलवर का आशक करनामजकूर है॥ आशक तो
आशकी में रहता वो चूर है॥ मय वहदत का आशा की गर-
बै सुरूर है॥ कहै बनारसी चल उस दिलवरके घरतू॥ होगा
इसका दीदार इश्क को कर तू॥ ४॥

तुझ गुल को देख से गुल गुल बदन पै खाते गुल
सारे॥ तरह देख करते री वो तरह तरह तरह देगई प्यारे
॥ बड़े बड़े सरदार झुकामें सरते रे सरके आगे॥ दर्शन खा
तर खड़े दुर्वेश तेरे दरके आगे॥ दिलवर सो। से पड़ा तड़
फता है तुझ दिलवर के आगे॥ हाल हमारा हुवा वे हाल
सितमगर के आगे॥ शेर ॥ ॥ ॥

जुल्फका रहै जुल्फ तेरीया कि यह जुल्मात है
मह बी है अखतर बी है जिसपर अंधेरी रात है॥

करैं ॥ मिस्ल परदा कदम बोसहो यार अफ्काकारी जो करै ॥ रजामें
राजा हुवा दिल अवजनाव कारी जो करै ॥ माहो फलक पे रोश
न उसकी फरमाबरदारी में हैं ॥ खाकसार हो अरे दिल मजा
खाकसारी में है ॥ २ ॥ अपने तईं रंज हो तो बला से और कि-
सी को राहत हो ॥ इस्से वेहतर कोई नहीं बात अगर कुछ
हिम्मत हो ॥ जो अपने तईं हकीर समझे दो जहान में इज्जत
हो ॥ मिसाले गिल के बनार है तो उस गुल से उलफत हो ॥ बात
के ऊपर तर्क करै गर लाख तरह की न्यामत हो ॥ कदम
क़दम पर शुक्र है अशारत हो या उशरत हो ॥ वसूल की लज्जित
से ज्यादा कुछ लुत्फ इन्तजारी में है ॥ खाकसार हो अरे दिल
मज़ा खाकसारी में है ॥ ३ ॥ जलवा हुस्न का खिला जहांन में
मग़र किसी ने जाना नहीं ॥ जान में अपने है जाना और किसी
ने जाना नहीं ॥ मये मुहब्बत में हूं मस्त मैं मुझसा कोई मस्ता
ना नहीं ॥ उसी के ऊपर किया दिल निसार मैं दीवाना नहीं
॥ बनारसी के सब इकसां हैं अपना और बिगाना नहीं ॥
सही यह रहे और मतलब चुस्मगलत छंदगाना नहीं ॥ क-
हैं बिश्वम्भर नाथ मेरा दिल उसकी यादगारी में है ॥ खाक
सार हो अरे दिल मजा खाकसारी में है ॥ ४ ॥

दिल नहीं आशकी के करने से डरतू ॥ होगा उसका
दीदार इश्क को करतू ॥ है जहां में अव्वल इश्क इश्क में
जाने ॥ ना पैदा इसके मतलब को क्याजाने ॥ दीदार जी
उसका करना दिल पर ठाने ॥ उस दिलवर के दर की ख़ाक
को छाने ॥ आशकी कर आशक फिरैं जैसे दीवाने ॥ मय
वहदत की पीके रहते मस्ताने ॥ अय दिल भर मेरे आशक
हो उस पर तु ॥ होगा उसका दीदार इश्क को करतू ॥ १ ॥ अय

रिल ॥ मांगे से मैं मांगता हूं एक जरासी बात है
जाने दे राहे अदमों हमको देनी जात है
नाज उठावो नाज़ तेरा सीमा बहुपरि मारे ॥ तरह देखकर
तेरी वो तरह तरह देगई प्यारे ॥ १ ॥ पेशानी थे हमें वी पेशा
नी का जहर नजर आया है ॥ चीने जबीं का वो जलवा चीनसे
नजर आया ॥ चश्मच चश्म हुए जब से वह सोल नूर नजर-
आया ॥ जिसकी नज्ज़ खी से जलता वोः कोह नूर नजर आया
॥ शेर ॥
अबनूका तेरे अबरू तवा बड़ा शमशीर से
और पलक तेरी मुझे पल पल में मारे तीर से
है वोः सुरमा सुरमा लड़ता है हर एक वीर से
हमन हे तलवार है कातिल तेरी तहरीर से
कौ तू जिसे धार वो हू अपने सर पर चलवाये आरे ॥ तरह
तरह देखकर तेरी वो तरह तरह देगई प्यारे ॥ २ ॥ शीरीं स-
खुन आपका शीरीं शखुन को भूलगया ॥ लब को देखकर
लाल कालिब ॥ औरयमन को भूलगया ॥ गला देखकर
आशक का दिल गला वतन को भूलगया ॥ शीने का वो है
निशाना लगा मैं मन को भूलगया ॥ ० ॥ शेर ॥ ० ॥
अदों से मैं तेरी बेंाकर अदों हुए मेरे दिलवर
गैरेरुतबेने रुतबे को दिया रुतवा बहुत बेहतर
वो भोले पन से तू दिल को वो भोले है तू जलवेगर
भुला वा देके मुझको क्या भुलावे औरु खे अनवर
तेरा वो आलम देखके कुल आलम अपना तन मन वारे ॥
तरह देखकर तेरी वोः तरह तरह देगई प्यारे ॥ ३ ॥ जोदे खे जोब
न तेरा जोवन वन में दे सन फिरै ॥ जान तुझै जो देखलें वो आप्रा

ग्रावावे जान फिरें ॥ चान आपकी यही कि जिसपर कुल आये क कुर्वान फिरें ॥ जान आपकी देख कर परेशान गिलमान फिरें ॥ शेर ॥ नजरदेखे जो तेरी वोः नजर बंद होके कसजाये

और देखे नाक तेरी तो दम उसका नाक में आये

जो देखे तिल तेरा का तिल तो दिल फिर उसका घबराये

और देखे मुंह तेरा फिर मुंह वोः अपना किसको दिखलाये

देखने तेरे रुक भौर फार रुचे भी तो फेरले रुख मारे ॥ तरह देख कर तेरी वो तरह तरह दे गई प्यारे ॥ ४ ॥ कदको देखके दियानकद निकलगया सबकद साहब ॥ पेट देखकर पड़गये लपेट में उलफ तके अब ॥ तनये तन मनुवारिके तनहा फिरता हूं रोजो शब ॥ दबको तेरे देख हम दुनियां से होगये वेदब ॥ (शेर) ॥

तेरी उसरान ने राना किया है रा और तह वाला

मैं पांअं बावले रेपा कोंनू सरना पासे है आला

वो तलवा है तेरा जिसने कतल वागे सेकरडाला

और नाखूं देखने तेरे बोना खूंका भरि पिये प्याला

बनारसी ने जान नज़र की जब वो मारे नज्जारे ॥ तरह देख कर तेरी वो तरह तरह दे गई प्यारे ॥ ५ ॥

गुलन दाम आफत मामखूरे जसन मय कता है हुसन ॥ जिसके झलक से फलक पे शाम सो कमर दोनों रोशन ॥ हर गुल के तई अदा दिखाता चला चमन मे तीरो फिगन ॥ बुलर बिस्मिल वेताब हुऐ मुरगाने चमन ॥ गुल गुलरान मे गनचा रंग वह रंग हुवा वरगे शोसन ॥ आशक शेदा फिरे वे जवान बन बन के हिरन ॥ दामें इश्क पेचा की तरह से हुस्न पेलटके है नागन ॥ आईने में जुल्फ नहीं है यह हलब में मुश्के खुतन ॥

हुश्नमें अपने वो सरसार है कहिये तो क्या कहिये
यों दिल चश्म का बीमार है कहिये तो क्या कहिये
लबों पर जान आशक जार है सो कहिये तो क्या कहिये
हम हैं और इश्क की तलवार है कहिये तो क्या कहिये
नूर वे यार की चमक दमक से घर रोता है चर्ख कुनेहे ॥ जिसकी झलक से फलक पर शाम सो कमर दोनों रोशन ॥ १ ॥ रंगीनी से दिलवर की है एन नज़र आता गुलशान ॥ हर एक गुल को हुई वे कली लगी उस गुल से लगन ॥ लाल सब पै हुई हलाल बुलबुल बागे इरम में करो दफन ॥ गुल्लाले की पंखड़ी तोड़ कोदेना इसे कफन ॥ मकतल में आते कातिल ने हुक्म दिया हर एक को विजन ॥ सरको हथेली पर रखके सिर पै खेल गये आशके ॥ शेर ॥ फसा है इश्क में वे हतर हूं दिल अब आह क्या कहिये
कहे हैं हम नमी उस्से न मिल अब आह क्या कहिये
गये हैं भर जिगर के जखम छिल अब आह क्या कहिये
करै है पास दिल कातिल का तिल अब आह क्या कहिये
सुन के हुश्न की धूम को पगया परिस्तान इन्द्रासन ॥ जिसकी झलक से फलक पर शाम सो कमर दोनों रोशन ॥ २ ॥ चमन वो सरदार गुलों का हर गुल में है बशा की फावन ॥ आया अदां से जो गुल आबाद हुआ गुलशान का हरन ॥ शाम में उसको देख रश्कों से चाक करै गुल पैराहन ॥ वो याद में यूसुफ गिरा जब देखा उसका चाहे जकन ॥ सीरी शहाये सरमस्ता आशक फिरता बन बन कुहकन ॥ अशक रवां है चश्म से जैसे भवतु पावें स की भरन ॥
॥ शेर ॥
तसव्वुर में उसी के दिल बहुत हैरान रहता है ॥
नाहिं मिलता है वो जालिम उसी का ध्यान रहता है

झलकता है हरेक जर्रे में वो दिलजान रहता है ॥
कब उसका वस्ल हो हासिल यही अर्मान रहता है
रोज दिखाना मनमन येनयेनाजो अंदाज चलन ॥ जिसकी
झलक से फलक पर शम्स सो करे मे दोनों रोशन ॥ ४ ॥ यों तो
हजारों तरहदार दुनिया में मयस्सर हैं लेकिन ॥ कहां वो
गुन है कि जिसकी वायस दिल रहता है मगन ॥ लिया इ
श्क का पंथ यार के दरपे मार बैठे आसन ॥ जामें मुहब्बत
पिया है मस्ता हुए गहे गुरू के चरन ॥ मिले विसाल मे उठाये र
जो अलम दिलजान वारके जतन ॥ रसीद मिसरा क्या वह र
कंद रंगीन सकुन ॥ शेर

दरशा की शाह अव्वल तुम अब धर ध्यान इसे सुनाना
गुलों से यह कहे गुन वान अब इसे सुनना ॥
न रखना आज अपने दिल में कुछ अर्मान इसे सुनना
कहे मेफिल में काशगिर निराला तान इसे सुनना
कहे विशंभर नाथ हमारा दिल छल लेगया नंदनंदन ॥ जिस
की झलक से फलक पर शम्स शेम कर भर दोनों रोशन ॥

उसी का जलवा हर जलवे में और न जलवे गर
देखा ॥ अपने दिल के सिवा नहीं पास कोई दिलवर देख आ
ईने को तोड़ के जोड़े ऐसा शीशेगर देखा ॥ तसवीरों में मुरक्के
सभी उसे वेंहतर देखा ॥ दूध फाड़ के फेर मिलाये ऐसा आमि
नजर देखा ॥ मैं भी उससे जुदा को मिला तो बड़ा अचरज देखा
॥ हर एक मकां देखा हमने पर इसी को इधर उधर देखा ।
अपने दिल के सिवा नहीं पास कोई दिलवर देखा ॥ १ ॥ मव
यारों में बैठ के हमने इल्मों का दफतर देखा ॥ उसके वान्व
से नहीं उसके मानी अक्षर देखा ॥ मब को कापके फकदिय

वलो है कलम को तर देखा ।। फिर से लिखूंगा इश्क का हाल
जो इस दिल पर देखा ।। रकम करो यारो मेरा कहना हर हर दे
खा ।। कहीं न देखा तुझे अपने दिल के भीतर देखा ।।२।। माशू-
कों में की उल्फत में जब हमने इश्क वहर देखा ।। तैर गये व
हां खड़े हो कर के खूब ठहर देखा ।। इसकी लहर की जोर में
यार व बहता बड़ा शाहर देखा ।। दरिया या वो थान कोई आफ
त गजब व कहर देखा ।। मैं तो वहां से टला नहीं उस जा दिल
चर का दर देखा ।। अपने दिल से सिवा नहीं पास कोई दिल
देखा ।।३।। तेरी निगह आम सीर माफिक और नहीं आस्तर दे-
खा ।। मिजे की नौं के गड़ी ऐसी कि नहीं नस्तर देखा ।। बनार
सीने दिल देखा सब को इसके भीतर देखा ।। कहीं न देखा
तुझे अपने दिल के भीतर देखा ।।४।।

इश्क जो करे वोही जाने ।। दूसरा क्या कोई पहि-
चाने ।। इश्क का अजब बजह था का हाल ।। कहूं कि स्तर ह
से मैं अहवाल ।। कोई गर आशक हो इक माल ।। तो वोह देखे
उसका जमाल ।। इश्क में जो होवे पैमाल ।। रहै गुस्सा लो में
वहलाल ।। . ।। शेर ।। . ।। . ।।

महक से इश्क की हरदम दिमाग तर रहै उसका
महक खूबी की वो पावे शरबुन भी घर रहै उसका
खौफ नहीं और दुनियां में सिर्फ एक डर रहै उसका
और हर एक मकां भूले निगह में दर रहै उसका ।।

दो॰ कह कह के सब कह गये न मिला इशक का अन्त
या जाने वोह साइयां या जाने कोई संत ।।

वोही वे पागे जो खाक छाने ।। दूसरा क्या कोई पहिचाहने
कोई गर करे इश्क की चाह तो फिर नहीं कहै न वा से आह ।।

छोड़ दे सब दुनियां की राह ॥ किसी का माने नहीं पनाह ॥ इश्
का होवे उसकी आगाह ॥ जो देखे सब को पाक निगाह ॥ शेर ॥

वने जो आशक सादिक तो अपने यार को पाये ॥
जो देखे इक सूं सबको तो उस दिलदार को पाये ॥
चमन में इश्क के वोही गुले गुलजार को पाये ॥
रहे जो बागवां बन बाग में बहार को पाये ॥ ० ॥

दो० आशक बुलबुल हो रहे करे हर एक चमन की शेर
नहीं किसी से दोस्ती और नहीं किसी से बैर ॥

इश्क का करे क्या कोई बयान ॥ नहीं कहा सक्ती मेरी जबान ॥
इश्क में जोन खपाये ज्ञान ॥ उसी को मिलता वह दिल जान ॥
इश्क में जो नकु आगल तान ॥ रहे अपने मन में मस्तान ॥ शे० ॥

जबां में आशकों है यारवुन शारी औदक्कानी ॥
सुने गर जो कोई दिल से तो होवे उसकी जिंदगानी
कहूं मैं किस तरह किससे कोन समझे है यह बानी
तमाशा देखने को सब कोई आते हैं सैलानी ॥

दो० कहते हैं करते नहीं नहीं उन्हें मिला महबूब
जो कहके करते सखुन वो आशक हैं खूब ॥

हुऐ हम इश्क में दीवाने ॥ दूसरा क्या कोई पहिचाने ॥ ३ ॥
इशाक देखा हमने करिके ॥ रह अब जीते ई जी मरके ॥ इ
श्क के बीच कदम धरिके ॥ जरा नहीं पीछे को सरके ॥ ग-
दा हम हुऐ उसी दरके ॥ नाम लेते है हरके ॥ शेर ॥

पहन कर इश्क का बाना और छोड़ा सवी बाना
कोई कहता है सौदाई कोई कहता है दीवाना
हमें नहीं काम गैरों से सिरफ वो इश्क मन माना
मुझे आशक वोही जाने जो होवे आशके दाना

दो० बनारसी हर हर कहै रहै सदा एकन्त ।। और
इश्क सब झूट है इश्क मार फननंत ।। + ।।

हम हैंगे इश्कम्में मस्ताने ।। ।। दूसरा क्या कोई पहिचाने
जो इश्क करोगे जीसे गुजर जावोगे ।। गर बचे तो फिर
शहदाई कहलाओगे ।। नहीं हम मुफ़्त में इश्क किया करते
है ।। बस अपने खून को आप पिया करते हैं ।। दिन रात जिग
र के जख्म सियाँ करते हैं ।। इस यार के हाथों यार जिया क
रते हैं ।। माशूक दाग पै दाग दिया करते हैं ।। हम तो भी इन
का नाम लिया करते हैं ।। तुम कहां तल के मेरवूने जिगर खा
वोगे ।।०।। गर बचे तो फिर शहदाई कहलावोगे ।।१।। मैंने तो-
अपने दिल बर यह ठानी है ।। अब देखे वह दिल के सानू रा-
नी है ।। है रान हूं उसके गम में हैरानी है ।। दर शहर शहरा की
खाक छानी है ।। अब उसके इश्क में तबीयत मस्तानी है ।। इस
प्यारे की कुछ मुझपर मेहर्वानी है ।। मुनतावे हसरत त क
नहीं उसे पावोगे ।। गर बचे तो फिर शहदाई कहला वोगे ।।२।।
कुछ सहज नहीं है इश्क बला आफत है ।। खूं पीना खाना
जख्म मेरी जाफत है ।। दिल जान से अब मेरी उसकी उल-
फत है ।। अब तो हरदम उस प्यारे से सोहवत है ।। देखा हम
ने सब मतलब की खलकत है ।। आसान नहीं है इश्क बड़ी
मेहनत है ।। इस कूंचे में तुम कदम अगर ला ओगे ।। गर ब-
चे तो फिर शहदाई कहलावोगे ।। ३ ।। अब हम तो इश्क में
सदा फसे रहते हैं ।। अपने दिल को हम वक़्क में रहते हैं
।। प्यारे की नजर हम चीच बसे रहते हैं ।। उसके कूचे में
रोन बसे रहते हैं ।। कह देवी सिंह वो सदा हंसे रहते हैं ।।
गर बनारसी के साथ ख्याल गा ओगे ।। गर बचे तो फिर ।। ४ ।।

चीर हरण लीला

ब्रज चलो सखी करो दर्शन नागर नटके ॥ है जीने के फल यही मिटें सब खटके ॥ अधरन पर बंसी धरे सांवरा म टके ॥ वो घूघर वाले अलका लटलटके ॥ कभी पकड़ के बहियां इधर उधर झटके ॥ अंगिया के टूटे बन्द चूड़ी चटके ॥ बिन स्याम सुन्दर के बहुत मेरा दिल भटके ॥ है जीने के फल यही मिटें सब खटके ॥ १ ॥ एक रोज सहेली गई नीर प न घटके ॥ बोले के चीर बनवारी वहां से भटके ॥ कभी कदम के ऊपर चढ़े कभी वृक्ष बटके ॥ कहे कृष्ण सखी तुम आवो नीर से हटके ॥ सब शरम त्याग कर गले से गई लिपटके ॥ है जीने के फल यही मिटें सब खटके ॥ २ ॥ श्री कृष्ण चंद्र ने रास रचाया डटके ॥ तन पर साजे सिंगार पीतांवर पटके ॥ ब्रज वाला देखे खोल के पट घूंघटके ॥ कई कोटि सूर्य है ऊपर सीस मुकट के ॥ छवि स्याम सुन्दर के बीच में रामन भटके ॥ है जीने के फल यही मिटें सब खटके ॥ ३ ॥ जो ज्ञानि हो नहीं गावते फटके ॥ फटके गाने वालों से रहते फटके ॥ छन्द कहैं देवी सिंह नये निराले ढटके ॥ दरशन करते हैं श्री गंगा के तटके ॥ अब बनारसी के खुलगये पाट क पटके ॥ ये जीते के फल यही मिटें सब खटके ॥

इस जहां में आकर वोही शख्श जीता है ॥ जो जी नेजी मरजाय वही जीता है ॥ सुन एक ब्रह्म में सब घट २ में जानो ॥ जो कोई बुरा कहे जाय बुरा नहीं मानो ॥ कर भज न तजे इस काया का अभिमाने ॥ अपने आतम में राम २ पहिचाने ॥ सुन यही काम प्रह्लाद भक्त कीता है ॥ जो जी नेजी मरजाय वही जीता है ॥ १ ॥ ध्रुव ने त्यागा सब राज

मारके मनको ॥ गुरूसे लेकर उपदेश चलेगये वनको ॥ दिनरात लगाकर ध्यान भजै भगवतको ॥ हरि खुशी हवे नहीं मरा निन रामनाम लीना है ॥ जो जीते जे मरे जाय वो ही जीता है ॥ २ ॥ प्रहलाद भक्त ने अपना मन जब मारा ॥ तो हरना कुश का मान उडाया सारा ॥ नरसिंह रूप श्रीनारायणने धारा ॥ नखसेती फाडा पेट असुर संघारा ॥ चहूंवेद शास्त्र कहैय ह ज्ञानगीता है ॥ जो जीतेजी मरजाय वही जीता है ॥ सब काम छोड़के नाम धनी का लीजै ॥ धनि श्रावैता परस्वारथ को सिर दीजै ॥ कहै देवीसिंह हरिभक्ति अभु की कीजै ॥ हरि२ कहने से नहीं उमर कुछ छीजै ॥ अब बनारसी हरि अमृत रस पीता है ॥ जो जीतेजी मरजायवही जीता है ॥ ४ ॥

श्री काशी जी की स्तूति

मेरे हर अव्यय अवनासी ॥ त्रिशूल पै की रचना शिव तेरी धन धन है काशी ॥ वहै जहां उतर बाहिनी गंगा उज्वल जल अमृत रस पूरण सुन्दर उठत तरंग ॥ शीश पर लपटे शेष भुजंग ॥ रुल मल झलकत मस्तक शशि गौरा संग अरधंग ॥ दोपदी ॥ भस्म चंदन का झील कहिये हाथ में त्रिशूल चक्र लिये ॥ रूस धर अनुभव सन्यासी ॥ त्रिशूल पै की रचना शिव तेरी धन धन है काशी ॥ भास्कर त्रिपुरा सुरदानो ॥ उसके ऊपर त्रिशूल गाड़ा सत्य सत्य मानो ॥ त्रिगुण तिरशूल को जानो ॥ इसके ऊपर रचाई काशी सुनौगुनी का नौ ॥ दोपदी ॥ बात यह अनुभव की कहते ॥ कोई ज्ञानी इसको लहते ॥ लगी जिन्हें शब्दों की गांसी ॥ त्रिशूल पै की रचना शिव तेरी धन धन है काशी ॥ २ ॥ काशी कंचन की बनवाई ॥ तैंतीस कोटी दई देवते सबके मन भाई ॥ यहीणा

येजइराई ॥ शिबजीसे तीकहा आधीदो हमको वरवाई ॥ दौपदी ॥ हुएफिर सब मनमें खुशहाल ॥ कहा तुमगोपाललाल मुनो ॥ बनो अबकासी केबासी ॥ त्रिशूल पैकी रचना शिब तेरी धन धन है काशी ॥ ३ ॥ बना श्री गोपाल का मंदिर ॥ आधीपुरी देहकी आधीमें शिवजी कारहेदल ॥ जहां होता बुढवा का मंगल ॥ रात दिन रहै मेला बृहस्पति का होता दंगल ॥ दोपदी ॥ महिमा क्या कहूं मेले की ॥ अजबशोभा अलबेलेकी ॥ रामलीला होती खासी ॥ त्रिशूपैले कीरचना शिवतेरीधन धनहै कासी ॥ ४ ॥ शिवाला कंचन का खासा ॥ चारों तरफ़ लगी सभा जहां सब देवता काबासा ॥ हमहरचरणों की आसा ॥ अन्नपुरणा आप करे काशीमें निवासा ॥ दोपदी ॥ यासमें दंदी राजगने देयवो सब नगको उपदेश ॥ रहैं दुष्टोंसे उदासी ॥ त्रिशूल पे कीरचना शिवतेरी धनधन है काशी ॥ ५ ॥ बनेजहां सुंदर सुंदर घाट ॥ जोप्राणी न्हाते गंगा दे उनके संकट काट जहां गलियों की टेढी बाट ॥ अजब तरह के लोग जिन्हों की बांकी तिरछी डाट ॥ दोपदी ॥ अस्सी पर जगन्नाथ स्वामी वो घटके अन्तरजामी ॥ योगमें पूरे अभ्यासी ॥ त्रिशूलपे की रचना शिबतेरी धनधन है काशी ॥ ६ ॥ ताड़केश्वर सबको तारें ॥ ताड़क मंत्र सुनाय के अपने जनको उबारें काशी में एकादशी धारें ॥ औररखे सब प्रदोषदोषवारें ॥ दोपदी ॥ केजोनरपव कोप्रशी जाने ॥ भक्ति बिन किये मुक्ति पाने ॥ काटदेते जमकी फांसी ॥ त्रिशूल पेकी रचना शिवतेरी धन धन है कासी ॥ ७ ॥ कामैरों वहां के कुतवाल ॥ दुष्टों को देदंड करें सब भक्तों की प्रतिपाल ॥ बड़ेबड़े एक ॥ येकहूंमें

में कहांतक अहवाल ॥ दोपदी ॥ संकटा संकट की हरनी ॥ और दुरगे है। तारण तरनी ॥ महल सब बनरहे अकासी ॥ त्रिशूलपै की रचना शिवनेरी धनधन है काशी ॥ ८॥ वे से सब काशी में आनन्द ॥ ब्राह्मण क्षत्री वेश्य शूद्र नहीं किसी को है दुख द्वंद ॥ सुनो तुम काशी गिर के छंद ॥ हरेक बात उनकी ऐसी है जैसे मिसरी कंद ॥ दोपदी ॥ कहा कार मुख से हरदम राम सिरे है सब में हरका नाम ॥ सृष्टि सब शंकर की दासी त्रिशूल पै की रचना शिवतेरी धन धन है काशी ॥ ८॥ आन अदा दिखला गुल रूने सब गुलशन को — लूट लिया ॥ इम के हुस्न की रुलकाने तोहर एक फावन को लूट-लिया ॥ हुस्न दिखाकर चांदनी चंद्र वदन को लूट लिया ॥ मल मल के खुशबू जुलफों में मुश्के खुतन को लूट लिया और मिजगाने नरगिस से कावल हिरन को लूट लिया ॥ ज्वाना की ज्वानी ने आज सबके जोबन को लूट लिया ॥ कजदन आया और आकर सारे चमन को लूट लिया ॥ १॥ उस की प्यारी बातों ने वोः शीरीं शखुन को लूट लिया ॥ सांवलिया के रंगने कुल तखते रोकन को लूट लिया ॥ माहल को केलबों ने गुंचे दहन को लूट लिया ॥ पान चवा कर दिया खून कफन को लूट लिया ॥ हुए वो दंता सुर्ख जिन्होंने लाले यमन को लूट लिया ॥ कजदन आया और आकर सारे चमन को लूट लिया ॥ कारिके दिल्लगी लगाके दिल दिलरुबाने मन को लूट लिया ॥ दरशन देके सनमने छह दर्शन को लूट लिया ॥ पहनके जेवर रुकादे चौदह रत्न को लूट लिया ॥ मेरे जिसम पै लिबास पोश बारह आभरन को लूट लिया ॥ दिखाके अपना मुल्क वो जन्नत सब के वतन को लूट ९

लिया कज़दन आया और आकर सारे चमन को लूट लिया ॥३॥ मलके दस्त में हिना लगादी आग अगन को लूट लिया ॥ चालने उसकी जहां में सारे चलन को लूट लिया ॥ अल्क नेजानी की जवरन करकर के जहन को लूट लिया ॥ छोरव सनमने विश्वम्भर के दुशमन को लूट लिया ॥ घूम के पूर्व पश्चिम और उत्तर दक्खिन को लूट लिया ॥ कज़दन आया और आकर सारे चमन को लूट लिया ॥ ४ ॥

क्या देखे खूनी नैन वो सनम तुम्हारे ॥ एक मरोड़ से कई किरोड़ आशक मारे ॥ है कांटे कटीले हाय नचंचल चित चोरें ॥ इन नैनों का है जहान में गुल शोरे ॥ काली पुतली हैं नैना गोरे गोरे ॥ गोरे नयनों में छुटे गुलाबी डोरे ॥ जब नैनों में गड़ जाय नैने की कोरें ॥ खूब रू से रंग में रहै नयन सरवोरे ॥ नैनों की कोर से करै वार पै वारे ॥ एक मरोड़ से कई किरोड़ आशक मारे ॥ है बलाय आफत जान नैन तूफानी ॥ या काहर कयामत मुल्के अदम निसानी ॥ सुरमें की खींच तहरीर अदा लासानी ॥ तेरी तेग खुरासानी पै बाढ़ दुरानी ॥ जिस निगाह आशक ऊपर तिरछी तानी ॥ वो ऐसा मारा पड़ा मांगे न पानी ॥ यह नैन नहीं हैंगे खंजर के दुधारे ॥ एक मरोड़ से कई किरोड़ आशक मारे ॥ २ ॥ तेरी तेग निगाह यो शोख शितमगर काटे ॥ नहीं वो कपस नहीं खांडा खंजर काटे ॥ क्या काट दुधारा बिछवा जमधर काटे ॥ गर पड़े कोह पर पहाड़ पत्थर काटे ॥ जंजीर जिरह फौलादी बखर काटे ॥ दो नैन लड़ा आशकों को के लश्कर काटे भौ कमान पलकें तीर निगह तलवारे ॥ एक मरोड़ से कई किरोड़ आशक मारे ॥ ३ ॥ है जादू भरे दो नैन न तेरे-

सरनाम ॥ आशकों पे हमेशा कहते हंगाम ॥ जिसको मारे होतमाम उसका काम ॥ लाखो दल के दल यल में किये कतलाम ॥ मीरन चुनूरदयाल साई स्याम ॥ कहे देवी सिंह आशकों का कठिन अंजाम ॥ क्या तेरे जुलम का और कोई इजहारे ॥ एक मरोड़ से कई किरोड़ आशक मारे ॥ ४ ॥

सदमें इश्क के कौन सहे मुरु बिस्मल आबाप के ॥ कतल हुए कातिल से मिलके जी ॥ हुस्त में देखे है रानमें हो खुरशीद हुए ढिल हिलके ॥ चांदनी सिजल हुई खिलके जी ॥ आफताब छिपजाय ख्वाब में रश्क से कातिलके पेच से जुल्फ मुसल सिलके जी ॥ बिर्दजबां है यही सखुन मुम आशक घायल के ॥ कतल हुए कातिल से मिलके जी ॥१॥ गुलशन में गुल कोई नहीं उसगुल सब बने आबो गिलके जी ॥ हरे हुए फिर जखम जिगर सब मिलके मिल मिलके ॥ दिखाये दाग किसी दिल के जी ॥ दिलो जानसे हम हैं मायल अपने मायके ॥ कतल हुए कातिल से मिलके ॥२॥ दिल से सनम की याद लगा आशक जो चले पिलके यार हुए दरिया हालके जी ॥ सूली पै मंसूर चढ़ा हम दम से हिल मिलके ॥ कठिन रस्ते उस मंजल के जी ॥ उसने मेरा दिल छीन लिया दरमियान में मैं फिलके ॥ कतल हुए कातिल से मिलके जी ॥३॥ अजब कारस में है उस रबकी कुदरत का मिलके ॥ अदिल जारी है आदिलके जी ॥ बनारसी चे सखुन समझ में आवे कामिलके ॥ मुवक्किम आलिम फाजिलके जी ॥ कहे विशंभरनाथ नहोना साइल जाहिल के कतल हुए कातिल से मिलके जी ॥ ४ ॥

अथ लावनी सोलह लक्षण की

चार चतुर पग चार परेवरू चार फूल फल दें न्यारे ॥ बिना पुरविले की पुन्याई मिले नहीं ऐसी नारे ॥ सोलह वर्ष की उमर किये तन सिंगार चित चोभा ॥ बारह आभरन तनपैं र लकैं देख सज्जन का मन लोभा ॥ आठ गांठ कुमेद नाजनी जैसे केले की सोभा ॥ चार फूल फल चार थार खग नर खर नदो की सोभा ॥ सोलह लक्षण जिस अबला में वह लक्ष्मी का अवतारे ॥ बिना पुरविले की पुन्याई मिले नहीं ऐसी नारे ॥ १ ॥ चढ़ती ज्वानी बाला जोबन पवन लगें गोरी थर्राती ॥ चीते की सी कमर नारि की पग धरते सौ बल खाती ॥ चंद्रमुखी सुंदर शशिवदनी आभा रती नहीं जाती ॥ लचक चाल गज चलें मंद गति भक्त चलें जैसे हाती ॥ सुरंग सा पट घूंघट लटके मणि मुक्ता के गल हारे ॥ बिना पुरविले की पुन्याई मिले नहिं ऐसी नारे ॥ २ ॥ चंपे का सा बदन निरखि भई सो दिल मे कुर्वान परी ॥ लाल लाल कर उंगली कुसुमरंग चंचल ताई तन में भरी ॥ गोल जांघ जुही सी साने केले दो शाख धरी ॥ चरण कमल कोमल से कोमल सुर्खी छाई जसा जरी ॥ नाजुक पुतली बन रही कामिन पतली काया दें तारे ॥ बिना पुर बि० ३ ॥ अधर बिंब कुंदरू से चमके मिस्सी की जमा रही थड़ी ॥ सख्त नारियल सी दो छाती मन ललचाता घड़ी घड़ी ॥ नारंगी सी ऐड़ी दमके बन ठन कर तैयार खड़ी ॥ पग नेवर के ऊपर भाझन मधुर २ धुन झनकारे ॥ बिना पुरविले की पुन्याई ॥ ०४ ॥ छुटे केश भौरे से मुख पर लटर के घूंघर वाली ॥ ओस चांदनी आई बांबी से नागिन काली ॥ सूये की सी बनी नासिका कपोल पर अद्भुत लीला ॥ कंठ कोकिला बोलै गर्दन गोल कबूतर वाली ॥ उपमा उस की कहूं कहां तक सकल कवी-

ख़बर कह हारे॥ विना पुरविले की पुन्याई॥ मिले नहीं ऐसी नारे॥५॥ बूटा तन वना भला और तन पै पहने आभूषन॥ मुखड़ा जैसे बाग़ अजायब बदन हुस्न का खिला चमन॥ नूर देख के हूर लजाती अंग चिन्ह सोलह लक्षण॥ तू सब में सर्दार कामिनी हुस्नपरवानूं चौदह रतन॥ मुख मुखड़े को देख चंद्रमा कोटि कला से तन वारे॥ बिना पुरविले की पुन्याई मिले की पुन्याई मिले नहीं ऐसी नारी॥ संवत् अठारह अस्सी पुराण की वरनी माया॥ कृष्न पक्ष वैशाष मास तिथि एकादशी का दिन पाया॥ शाह अखी उस्तादि भगवती स्यामसिंह ने छंद गाया॥ कहै देवी सिंह हमने जग में किया इश्क का वैपारे॥ बिना पुरविले की पुन्याई मिले नहीं ऐसी नारी॥६॥

सरोपा को देखा तो सरोपा में सब तेरे आन पड़े॥ तुझ गुल का हर गुलशन में हर गुल करते हैं ध्यान पड़े॥ सीस को तेरे असीस देते हैं जो चाहनेवाले॥ काकुल का कुल जहान में कुछ वोले चाले॥ चीन देख कर महाचीन तक पड़ गये जीने के लाले॥ . ॥ शेर ॥ . ॥ . ॥ . ॥

तेरी भौं देख के भौंरे की है रानी नजर आई॥
और पेशानी थी जिसकी उसको पेशानी नजर आई॥
शाम हम कान कर देखा तो जिंदगानी नजर आई॥
और देखी शान तेरी तो परेशानी नजर आई॥

नान तुझे ऐ देखे गार मुरदा तो उसमें जान पड़े॥ तुझ गुल का हर गुलशन में हर गुल करते हैं पड़े॥ आँख का तेरी वयां खड़े करते हैं आहू बन के बीच॥ नैनों से देखा नैनों आकर वनू है इस तन बीच॥ पल पल में पल्को से मारे तीर चुभे हैं मन के बीच॥ चीनी को देख के तो चीनी अल्ल

मैने हर फन के बीच ॥ शेर ॥

देखे रुख सारे हर एक के नीचे रुख सारे हुए
और सितारो रुख पै तेरे फलक के तारे हुए
मुह को देखा तो मुझा में तुम मेरे प्यारे हुए
अय मेरे हमदम है हम दम को सनम मारे हुए

जान तेरी जो सुनी तो हम आकर के हिन्दुस्तान पड़े ॥ तुझ गुल का हर गुलशन में हर गुलशन में ध्यान पड़े ॥ २ ॥ दंदां वो कुंदन दांतो मे जैसे बिजली चमके ॥ लब के तालबे हुए वो लाले यमन ताबे मेरे दमके ॥ आपके शोरी सखुन को शीरीं सखुन लगा सुनले चमके ॥ गला देखके गला सुराही को दिल कुल मारे दमके ॥ शेर ॥

तेरे जोबन में जोबन अपना जो जोबन के दिखलाये
और सीने पर पसीना हुस्न का दरिया नज़र आया
कलाई देखकर मझको कलाई दिल था घबराया
तेरे हस्तों ने दिखाने है मेरे सर पे की साया ॥ १ ॥

तेरे पेट की लपेट पर होते हैं शेर कुरबान पड़े ॥ तुझ गुल का हर गुलशन मे हगुल करते है ध्यान पड़े ॥ ३ ॥ सिफत नाफ़ की कान तो सुनता फर्क ज़रा नहीं सागरसे ॥ कमर को तक मरगये वो वो चीज़ उठती नहीं सक्ते दरसे ॥ कामम को देखके दिया नक़द दिल फ़िदा है हम मालोज़रसे ॥ अदा पे हाके य दा निकल गये शहे मदा अपने घरसे ॥ शेर ॥

चलै तू चाल तो भी चाल फिर आये न दुनिया के
जो देखै सत तो है रान वो हबिस्बोर का समझो
तेरे पांका हूं मैं पावं र अपने पाप धर लाओ
मलूं तलवे पिऊं पानी तेरे चरणों को मैं धोधो

बनारसी का सखुन मारफ़त बिरले कोई पहचान पड़े ॥ तुम गुल का हर गुलशन में हर गुल करते हैं ध्यान पड़े ॥

ऐसी हालत हुई इश्क में ठंडी सासें भरते हैं ॥ सिसक सिसक दम निकले है नहीं जीते है नहीं मरते है ॥ नवो हाल होगया इश्क में अब जीना नहीं भाता है ॥ कहूं काल खा जाय काल आते हुए दहशत खाता है ॥ अपने दिल को गोना दू तो डूब नदी वह गता है ॥ नहीं डूबता नहीं तैरता थी पही में उतराता है ॥ दोनों दीन से गये नहीं अब कोई पास बिठलाता है ॥ जिसमें कहूं एक बात सुनो थो खातिर में कब लाता है ॥ नहीं होता आराम मुझे और जी से नहीं गुजरते हैं ॥ सिसक सिसक दम निकलवे नहीं जीते हैं नहीं मरते हैं ॥१॥ जमीन पर गर कदम धरे तो पाव मेरे करते थर थर ॥ आसमान को करूं इरादा उड़ा नहीं जाता बिन पर ॥ नहीं खलकत अब भाती है नहीं जंगल में मिलता बिस्तर ॥ नहिं ठिकाना रहने का पूरब पश्चिम दक्खिन उत्तर ॥ चारों तरफ़ हैं उजाड़ बस्ती कहीं नहीं आती है नजर ॥ बहशन होगई दिल पर दम्पर हम दिखलाई देह शर आंखों में आना तेचर जब कदम जमीं पर धरते हैं ॥ सिसक सिस क दम० ॥ साया में गर खड़े रहे तो शरदी से दम घबरावे ॥ अगर धूम में जाय फूल की तरह मेरा दिल कुम्हलावे ॥ भूखे गर्द ने हे तो कुछ खाने को जी ललचावे ॥ हाथ डालें खाने पर तो वह हाथ नहीं मुह तक आवे ॥ पानी नहीं पीते हैं तो फिर जिस्म मेरा सूखा जावे ॥ कभी कभी गर पिये तो दंदा गुलगल के होते माये ॥ करे जुल्म पर जोर जुल्म जालिम के खौफ से डरते हैं सिसक सिसक दम निकले हैं

नही जीते हैं नहीं मरते हैं ।। ३ ।। मुहसे कहना अलिफ-
निकलती आह मेरे दिलसे हरदम ।। ईई वेकली ऐसी न-
हीं भाती है मुझे बागे इरम ।। जाने आशक थे वो होते हैं मुस्ते
वेशाक चस्हम ।। ऐसा नहीं कोई रहा कि जिस्से कहूं मैं अप
ने दिलका गम ।। मीरन चुन्नू कहें देवी सिंह मनी इश्क मेंध रे
कदम ।। यही हाल होता है इश्क में इसी ख्याल में किया खत
म ।। बनारसीयों कहे कि यह दुख सांई भी नहीं हरते हैं ।। सि-
सक सिसक दम निकले हैं नहीं जीते हैं नहीं मरते हैं ।। ४ ।।
।। भुलना ।। अलिफ आयके इश्क में जाने खोई जरा अ
पने दिल नूं डर नहीं ।। बयाबान जंगल में मस्त रहना और कहीं म-
कान महल घर नहीं । अपने यारको दिल में देखता हूं मेरी और
कहीं पै नजर नहीं ।। मस्त आशकी में सदा मतवाला उसे और
किसी की खबर नहीं ।। १ ।। वे बाग चमन और गलक्यारी सबके
बीच में नजर वो आवता है । कहीं सोच की गुलशन नै यारकी
ता कहीं दस्त में खूब कढवावता है । उसकी कुदरत कायम है हर
एक तर्फ मेरी नजरों में सदा समावता है ।। मस्त आशकी में सदा मत
वाला उसे और तो कुछ नहीं भावता है ।। वे ताव जरा नहीं रही तन
में हवा खूब समिते हैरान यारों ।। दिल सदके किया अपने यारऊ
पर और जान भी उसपर कुर्बान यारों ।। सीस काटके दस्त पर खलिया
छान खूब हमने बयाबान यारों ।। मस्त आशकी में सदा मतवाला
उसे और नहीं किसी का ध्यान यारों ।। ३ ।। सेजान वेचके हमने यह
सौदा किया समझा जीते जी अपना मनीजी ।। सिसा बिन कदम धरा आ-
शकी में फिर पीछे को पांव नहीं धरना जी । इश्क किया हमने अपने शो
वरबानिरु फिर मरने के नहीं डरना जी । मस्त आशकी में सदा मतवाला
उसे और तो कुछ ना करना जी ।४। जो मजहां के आन में जान बेची

जिसका मोल न मिला छदाम है। प्यास लगी तो खूब तो खून पि-
या भूख लगी तो खाया तन चाम है बादशाह तो कोई विरले ही
नेकी यह इतने लोगों ने किया बदनाम है जी। मस्त आशकी में सदा मत्त
वाला मुझे और किसी से नहीं काम है जी। शहेह पर्फ है नहीं और सर्प है
नहीं और बर्फ़ में मेरा नहीं पहाड़ में है।। नहीं पत्थर में है नहीं शाख में
है नहीं खिड़की और लकड़ी किवाड़ में है।। नहीं सीस में है नहीं ने-
न में है नहीं पेट में है नहीं हाड़ में है। मस्त आशकी में सदा मतवाला वो
नो और नहीं किसी की आड़ में है।। ६।। खबू बसार बार खराब की ना और
चाहे जिन नाकर बरदाद प्यारे।। मैं आशिक मादिक हूं तो जानता है
यही मेरी है तुमसे फर्याद प्यारे।। लैले खातिर मजनूं ने तन अपना
का आपरी री खातिर मरगया।। मस्त आशकी में सदा मतवाला उसे
और नहीं किसी की याद प्यारे।। ७।। दाल में दाग में लाखों तेरे तन को ऊ
पर कोई मेरे समान हीं।। किस तरह से मरहम जर्राह करै मेरा होवा
है काम तमाम नहीं।। नबज देख के मेरी वो रोया मिला दारू का ऐसा
नाम नहीं। मस्त आशकी में सदा मतवाला इसे और ते किसी से काम
नहीं।। ८।। जाल जिक्र में गर कर्नूं अपने गम का तो हर एक आशक चूर
रहोवे।। आई नागर जंद देखूं तो टुकड़े होवे और सीमाव सुनके खाक धरहावे
।। मेरे इश्क का हाल सुन पाया गर जो तो आमिदा दिल में वह मन मसूर होवे
।। मस्त आशकी में सदा मतवाला इसे और नहीं बात मंजूर होवै।। रे रात औ
र दिन कर्नूं याद तेरी प्यारे तुम सा तो कोई महबूब नहीं।। बागे इरम में भी
नहीं एक गुल है यहां आलम में तुमसे कोई खूब नहीं।। बहुत दिनों के
बाद आ मिला हमको रहा मुझसे तुक भी गूर्व नहीं।। मस्त आशकी में सदा
मतवाला इसे और तो कुछ मतलब नहीं १० जे जवा सेव यां क्या कर्नूं तेरो में
वे ना वहूं।। मुझमें कुछ ताब नहीं।। मेहर पांव को तेरे सौ बार चूमें तेरे रुच हरे की
सानी महताब नहीं।। निगार जलन लके मेरा अब बखाक हुआ ऐसा जलता

भुनता है कबाबनहीं ॥ मस्त आशकी में सदा मस्त रहता उसका और ८
कुछ सवाल जवाब नहीं ११ सीनस्याह है दिल मेरा हरेक जा कांजैसे
खर्च के ऊपर खुर्शेद घूमें ॥ तेरे इश्क में रंज और गम सहा मैने वेनजा
रहोके कैद रहा खूमें ॥ तेरे इशक का नाश है चढा मुझको मन मस्त हो
कर सदा घूमें ॥ मस्त आशकी में सदा मस्त रहता वोतो और नहीं किसी
के फेरे में पैर चूमें ॥ १२ ॥ सीन सफ़क से सुर्ख है कदम नेरे और सीमाव
मे चंचल है दिल मेरा तेरे तलवों की खाक सीरदखी तेरे कूचे में किया
सौ वार फेरा ॥ मैने मश्रक ते मगरब तक देखा तुझको और रंग में रंगा
गा तेरा ॥ मस्त आशकी में सदा मस्त रहता और उसका कहीं घर वार नहीं
डेरा ॥ १३ ॥ स्वाद सादिवी तेरे है कायम दिलवर तू है शाद मैं तो तेरा गद
प्यारे ॥ अजब शान और गुमान शान तुझमें मुझे प्यारी है तेरी छवि अंदा
प्यारे ॥ मेरा तेरा है इश्क दर्गाह भीतर यही कोल इकरार वदा प्यारे
॥ मस्त आशकी में सदा मस्त रहता उसकी और नहीं अब पसंद प्यारे ॥
१४ ॥ ज्वाद जाखि है वह दोनों जुल्फ तेरी मुझे झलक दिखला के मार लि
या ॥ जैसे काली नागन को ईडसे तन में जहर छा यग पमि रा फटा दि
या ॥ तेरे नाम की दवा है याद मुझको वोही अमृत का मैने एक जाम कि पिया
॥ मस्त० इसने और कोई व्योपार किया १५ तो तू जन है आफत है गज़ब है तू
तेरा है हुस्न सितम और कहर प्यारे ॥ सामुद्र है तूं तेरी थाह नहीं मेरे
चश्म है अश्क की नहर प्यारे ॥ मथन कर के चार रतन पाये हमने मिला
एक प्याला मुझे जहर प्यारे मस्त० ॥ १६ ॥ जो जाहिर जहूर है हुस्न तेरा
यह तो हुस्न है नहीं फर्याद प्यारे ॥ तेरे होठ को देखकर के कोचमके
तेरे चेहरे की सानी नहीं चंद प्यारे ॥ तेरे लवों के ऊपर से लाल सदके तेरे
बोल है मिश्री कंद प्यारे ॥ मस्त आशकी में सदा मस्त रहता उसे और नहीं
बात पसंद प्यारे ॥ मस्त आ० १७ ऐन इश्क का हाल क्या कहूं यारों जिसने
किया है यही पहचानता है ॥ मैने लोगों में बहुत इजहार किया मेरा कहना

कोईनहींमानताहै हीरऊपर आशक रांझा दिलसे छोड़ीबादशाही-
खाक छानकाताहै।। मस्त आशकीमें सदांमस्त रहताहै और नहींबात
अजावजानताहै १८ गैनगारपर गारऔरवार परवारखंजरखम कोः
ऊपरजखम इकेखाया।। कियेटुकड़े२ दिलकेपुरजे२ फिरसीभावकी
तरह मिलापाया।। जुदाहुवा मुझसे करी याद तेरी मगन मस्त होकर
तेरा भजन गाया।। मस्त आशकीमें सदां मस्त रहता जहां खता
हूं वहां तुही पाया।। १९।। फेकायदा इश्कमें यहीयारोंबेनकसी
र होकेबहुत मारखाई।। कभीसंगके ऊपर सरपटका अपनाः
कभी पांवमें अपनेजंजीरपाई।। कभीखाकके ऊपर बिसरामकि-
याकभीडालदीकिसीनचारपाई।। मस्त आशकीमें सदांरहता म-
स्तउसेनहीं बातकोईमनभाई।।२०।। काफ़कुदरतका इस्त देखना
तेराऔरदूसरानहींहै तेरीसानी।।तुझे देखकर मेरा दिल मोम
हुवा तेरे बाल घनके हुआसंगपानी।। बहुत ढूंढ़ताथातूनहींमि-
ला हुई आपसे आपकी महिरबानी।। मस्त आशकीमें सदांरह
ना और कोईबात न मन मानी।।२१।। काफ़करमकरके नजर
अपनी तेरे इश्कमें मैंने अपना घरवार।। खोया।। कभीखून से
लाल दिलकिया हमने कभीअश्कसे मुहर का हार पोया।। मैंने
लाखों हीजखम परजखमखाये तुही मारलाथा मैंनहीं रोया।।
मस्त आशकीमें सदां मस्त रहता उसे औरकाम नहीं पसंदनहीं आया।।
गाफ गम रहे इस्तका तुझको दिलवर मैंनेदेखीहै।। तेरीवह सना
प्यारे।। कई लाखदफेतूनेमारा मुझको अजब इश्कके तीरसे
हना।।प्यारे।। तेरी मुलकका फलककलक शोरहुवा कई कोटि
आशक हुएफना प्यारे। मस्त आशकीमेंसदां मस्त रहताउस्से औरः
कोई काम नहीं प्यारे।। १३।। लाम सिखाहै कुएके बीचयेयह
जिसने इश्ककिया वोही हक्कताला।। इसी वास्ते मैंने यह शोकः

कियानैरे नामकीजपनाहूं सदां माला ॥ नेरी यादमैंतान दींतोमू
ल्यादिलवरमुझे वहुन इशामनोंसे पड़ापाला ॥ मस्त० ॥२४॥ मीमु
मक्केमें तुही श्रौर मसजिदमें तुही श्रौरमन्दिरमें है नेराठाकुर
द्वारा ॥ तुही मथुरामें है श्रौर काशीमें है तुही कावा किवलातेरा ॥
तुही हिन्दूमेंहै मुसलमान में है हरशानमें श्रौर नहींसब सेन्यारा ॥
मस्त० ॥ उसे श्रौर नहीं काम लगे प्यारा ॥२५॥ तूनाम तेरामैनेया
तुम्हसे मिलनेकी श्रौरकोई राहनहीं ॥ तुही१ महवूब है मेरे दिल
कायहां दूसरेकी कोई चाहनहीं ॥ नेरे इश्ककीश्रातिशहै लगी
दिलमें प्यारे वुझ्तीहै श्रवतो श्रवदाहनहीं ॥ मस्त० ॥ उसके श्रौर
तोकोई हम राहनहीं ॥२६॥ वावस्त मुझको नेराहुश्रा प्यारे
तुझे देखताहूं हैरानमै है ॥ चाहे लाखों हीतू जुल्मकरै तुझपै मेरी
वानश्रवतो मेरी जानमेंहै ॥ मेरमुर्शदने नामजोलिया नेरावोही
वानसुनी मैने कानमें ॥ मस्त० ॥२७॥ हैहाय कानाराहै दिल
सेजारी मुझे इश्ककी नोवड़ीमारहैजी ॥ जिसके कुछ दिलमें
कुछ इश्कका नामनहीं । नोदुनियांसे नोखस्नारवारहैजी ॥
मस्त० ॥२८॥ लामुश्रलिफकायै हैलामकानयारखउसमेंनूर
नेरा झला झल झलके ॥ उसेदिलदेखकेमेरा श्राशकहुवाउसीरो-
जसेवैठासे हायमलके ॥ जुदाकिसे हूतूनो एकहैगाछीन दिलमेरा
तूनेयारछलके ॥ मस्त० ॥ वोतो श्रौरनहीं श्रवकहीजाय चलके २९
ये श्रयाहैं जाहरजहूर है तू वड़ीदूर है श्रौर कुछ तू दूर नहीं ॥ नेरीया
दमेंचश्मसे श्रश्क वहते रोमेरे वंदहोनेयह नूसारनहीं ॥ मैंने मशा
रकमें मगरवलक देखासबको तेरेसानी तो है नूर नहीं ॥ मस्त श्रा
श्ककी में सदां मस्त रहता उसे श्रौर कोई वात मंजूर नहीं ॥३०॥

दास्तान देवी राम की ॥

काशीजीमें एक मनुष्य ब्रह्मस्वरूपथे ब्राह्मणाउनके पुत्र देवीरामहुए

जब उनकी ५ वर्षकी उमर हुई तब उनके पिताने उनको गुरूके यहां-
पढ़नेको लेगये जाकर गणेशका पूजन कारि जो वहांका दस्तूर सो
किया तब गुरूजीने देवी रामको कहा पढ़ो एक तो देवी रामने कह
एक फिर गुरूने कहा कि दो तो देवी रामने कहा १ फिर गुरूने कहा
पढ़ो ३ तो फिर उसने कहा एक इसी तरह गुरूने १० तलक उनसे
कहा पर वो एकही पढ़ता रहा तब गुरू बोले कि यह अभी लड़-
का है इसको अभी एक ही बहुत है उस दिन महूर्त करके उनके
पिता अपने ब्रह्मस्वरूपके घरमें देवी रामको लेगये उसके दूसरे
रोज लड़कों के साथ गुरूके जाया करता जिस लड़के को खूबसूर
त देखे उसकी तर्फ देखा करे और जो उनको कोई पढ़ावै तो वो एक
ही एक पढ़े इसी रीतिसे कुछ दिन गुज़रे तो वह हुशियार हुए जब बार
ह वर्षकी उमर हुई तो उनके गुरू बहुत खफ़ा हुए कि तुम एकही एक
पढ़ते हो और तुम्हें कुछ न पाया कभी गुरू खफ़ा होते थे कभी मारते
थे पर वो कुछ ध्यान नहीं करते जब गुरूके यहांसे आते तो रस्तेमें जि
नको खूबसूरत देखते वहीं खड़े हो जाते थे कुछ घरसे काम नहीं उन-
के पिताने देखा कि लड़का अभी तलक मदरखाने नहीं आया तो गुरू-
के यहां ढूंढने को गये वहां देखा तो नहीं है फिर शहरमें ढूंढ करके
जहां था मिल जाय उसको ले आवे उससे पूछा कि बेटा तुम क्या पढ़े
तो वो कहे कि एक जो पूछा और भी कुछ पढ़े तो फिर कहे कि एक उस-
के पिताने बड़ा अफसोस किया और लोगोंसे कहने लगे कि हमारे यह
एकही पुत्र है और इसकी १२ वर्षकी उमर हुई यह कुछ पढ़ा लिखा न-
हीं इसको कुछ घरसे मतलब न कुछ खाने पीनेका होश कभी इस
को देखते हैं कि वेश्याके द्वार पड़ा खड़ा इसको देखता है कभी
लड़कोंमें खेलता है इसका क्या उपाय करें तब लोगोंने कहा कि
इसको गुरूके पास ले जावो और उसने कहा कि महाराज इसकी ९

१२ वर्षकी उमरनक आपने क्या पड़ाया यह वो खूबसूरतों ही को देखा करता है तब वो गुरू के पास ले गये इनकों से जो कुछ हाल था सो कहा तब गुरूजी बोले कि देवीराम तुम जो खूबसूरतों को देखा करते हो और पड़ने लिखने नहीं ये क्या सबब है तब देवीराम बोले ॥ भू० ॥ वेद किताब का भेद कुछ और है तू ब्रह्म में नहीं मुतलक समान ॥ तेरे घट्ट के पट्ट के बीच म फसा है तू तुम्हे आवता नहीं कुछ भी पढ़ता देवीराम कहता मस पड़ा पांडे तूने सूरतों को नहिं जाना ॥ १ ॥ ये बात जब देवीराम की सुनी तो फिर पांडे बोला कि तुम्हें भूत लगा है उसका जबाब जब देवीराम ने दिया ॥ भू० ॥ केते राख जटा अंग छार लावें केते ओटे बांधबरी होन नागा ॥ केते गूदड़ी छाय तिलक देते केते कोठ कंठी भुजदंड दागा ॥ केते कान फाड़े च हूं ओर फिरे नेपरशन तवियोग वैराग पागा ॥ देवीराम कहे महबूब के देखने को वाव दंड फिती जैसे भूत लागा ॥ १ ॥ फिर गुरू खफा होकर के बोले कि तुम ब्राह्मण होके शराब तो नहीं पीते जो ऐसी बाते कहते हो तब देवीराम ने कहा मैं जो शराब पीता हूं उसका हाल सुनो ॥ भू० ॥ सुरत निरत की माट में नूर जल डाल के नैन से आप लगावता है ॥ छिमा भ्रांकता बैठके ब्रह्म आनि शल ये काम क्रोध जलावता है ॥ चढ़े ज्ञान जेता धरे ध्यान तेता देवीराम छक्के को छकावता है ॥ चटी इश्क भाटी चुए प्रेमदारू प्याला दीदम हबूब पिलावता है १ ॥ फिर पांडे ने उनके पिता से कहा कि यह जो तुम्हारा लड़का है इसके ऊपर जिन्न सवार है सो ज्ञान वापी की मसजिद में एक मुल्ला है और वो जिन भूत प्रेत उतारा करता है उनके पास ले जाओ ऐला जब उसने कहा इसमें हमको साबूत यह हुआ कि पांडे को कुछ ज्ञान नहीं है परंतु उसके कहने से उनके पिता भी अपने पुत्र की माया मोह में थे लाचार होके मुल्ला के पास ले आये ॥ और मुल्ला से कहा कि हमारे लड़के ऊपर जिन्न सवार है और

इसकायहहाल है कि ये कुछ पढ़ता लिखता नहीं और घरमें भी हमपकड़लाते हैं तो आता है जो कुछ हालउसका था बयान किया नबमुल्लाने कहा कि मैंवजूकरके अंजादे आऊं तो आके अभी इसकाभूतउतारदूंगा मुल्लागया जाके अजांदी उसनेजबफारिग होदेवीरामके सामने आया उसको देखते ही देवाराम बोले ॥ झूलना ॥ तेरे वाग दिये कहाहोतहैरे तूने दिल साबूत नहीं किया पक्का ॥ जिसने आपको नहीं तहकीक किया पढ़ी स्याम वकने लगा हक्का बक्का ॥ पांचु चारवक्त तूं नमाज पढ़ता नित्सौं रोज़ देवीराम रहा छक्का । देनौं सैनं में बैठ अकीन करदेख माशूक का द्वार है भिस्मका ॥ ३ ॥ येकलाम जब देवीरामका सुनातो बहुत खुश हुआ और उनसे कहा कि तुम्हारा माशूक कौन है तब देवीरामने हंस के कहा ॥ झूलना ॥ माशूक की जैभगवान होको जिसका नूपइस वक्त में छाय रहा जित देखों उत २ वोही सबके नैनों के बीच समाय रहा ॥ कोई यौं जुक्त कारके मैं आप ही आप मैं पाय रहा ॥ कोई यौं जुक्त करके मैं आपही आपमें पाय रहा ॥ देवीराम यहबात विचार कहता है कोई बूंद समुद्र में जाय रहै ४ ॥ यह बात सुनके मुल्ला बहुत खुशहुवा और कहा कि तुम्हारा माशूक कैसा है कुछ उसके हुस्नकाबयान करो देवीरामने कहा बहुत अच्छा ॥ गुनागुनगुलनारखुशरंग रंगरंग रंगावोएक चश्म हो रश्म की राह डोले ॥ हदअनहद दोमध्य के वाच एक तर्फ़ होवर्के कापाट खोले ॥ देवीरामसो कारके मध्ये हंकार नहीं छुटे ननपीरभर दृष्टि तोलेउगे भानुशशी और सत्ताईस नदात्र जबखूबसूरत मुस्कप बोले ५ ॥ यह जो मुल्लाने सुना तो कहा कि दोचार झूलने और पढ़िये तब देवीरामने कहा बहुत अच्छा आपतो बड़े समझदार हैं ॥ जिसदिन से नूरजहर हुआ सब आलम को आनंद हुवा ॥ उसस्याम सलोना

मूरती परनौछावर सूर्य चंद हुवा ॥ देवी दादार जिसने पाया सुरनर मुनि को आनंद हुवा ॥ संतो की मेहर मुहब्बत सेज चदर्शन नृप के फरजंद हुवा ६ देवी दशरथ के चारों सुत कहि दिन बोरु लेपलना जी ॥ वो अवध नगर के बासी जो सब के हृद कलना जी कुल आलमती नदी पाव किये वह आयेव- लि के छलना जी देखो यह सोख राम लला छोटे पायन से च लना जी ७ वेद पुराण अगम्य निगम्य जिन को गुण पार पा या है ॥ शंकर जी जा को ध्यान धरे नारद शारद गुण गाया है ॥ देवी महबूब वही सब का जो दशरथ के घर जाया है ८ जिन की माया से सुरनर मुनि नारद की सुध बुध भूलें जी जिन के आधे भी नाम समालानो त्रैलोक्य पन तुल्ले जी ॥ जिन के सुमिरन तें संतों के यह दिल भी गुल सन फुल्ले जी ॥ देवी यह हर हुवा ललना देखो पलना पर मूलें जी ॥ ६ ॥ ये जो गुफ्तगू मुह्ला ने देवीराम की सुनी तो समझा कि यह जाहदी दाहै और खुदा रसीदा है तो उन के बाप से कहा कि वह जो पांडे था जिस ने कहा कि इन पर जिन्न सवार है वो निहायत बे अक्ल और बेशहूर है तुम उस के कहने पर कुछ ख्याल मत करो यह तो अपने मालि क से मिला हुवा है इस ने तुम्हारा दोनों जहान में भला किया अब तुम हमारा कहा मानो इस ने अपने घर को ले जाओ यह जितने मरदु आये दुनियां के सब से वाकिफ़ है अगर घर में न आवे तो जहां मिले वहां से ले आये इस को खिला पिला दिया और कुछ जो तुम्हारी पास दौलत हो वो इस पर तसरुक करो और किसी की कुछ मत सुनो इस को किसी बात का खौफ नहीं बस इस को ले जाओ ॥ यह बात मुह्ला की सुनी तो ब्रह्मस्वरूप भी बहुत खुश हु वा और समझे कि हमारा लड़का ब्रह्मज्ञानी हुवा उस रोज से उन के पि

ताने फिर किसी से कुछ कहा अपने दिल में समझे थे कि हमा
रा लड़का वहुत अच्छा है इसने हमारा भी भला किया ऐसी ही
औलाद का होना अच्छा है जो ईश्वर का भजन करे॥

लावनी दधि लीला की

यह नंदलाल जसोदा दुलारो कानियां॥ लेगयो सखी
री मेरी दधकी मथनियां॥ सुन सखी एक दिन कान मेरे घर
आया॥ दधि गोरस दीड़ल काय और माखन खाया॥ दधिकी
मथनियां॥ हाथमें लेकर धाया॥ मैं देखा चोरी करते पकड़
बिठलाया॥ उन फाड़े मेरो चीर मैं तो रीत नियां॥ लेगयो सखी री
मेरी दधिकी मथिनियां॥ वो कृष्ण कुश्ता कुश्ती करने लगा॥
मथनी भी लेगया हाथ छुड़ाकर भागा॥ इतने में होगया भोर सुसु
रघर जागा॥ पतिने मुझ को अकलंक को लगा कर त्यागा॥ डर
सास ननद का हम को लगे लजिठनियां॥ लेगयो सखी री मेरी दधि
की मथनियां॥ २॥ सुन सखी श्याम सो मथनी क्योंकर पाऊं॥ गो
हि मांगन आवे साज बहुत सकुचाऊं॥ हैनयाने हशरमाने सब मु-
ख जाऊं॥ दूरी सी नटवर भेष देख ललचाऊं॥ मुख धर वसुरी व-
जावे लनियां॥ लेगयो सखी री मेरी दधकी मथनियां॥ ३॥
वह सुंदर सांवरा मेरी नजर जब आवे॥ पलकों से मारे सैन नैन
मटकावे॥ बंसी में मोहनी डाल मुझे विलमावे॥ एक नजर दि-
खाकर तन मन हरिले जावे॥ है ब्रज में प्रगटो बड़ो वह छैल चि
कनियां॥ लेगयो सखी री मेरी दधकी मथनियां॥ ४॥ माथे पर
चंदन मोर मुकट छवि छाजे॥ कानों में कुंडल कर मुरली विराजे
॥ एक पड़ी नाक बुलाक अधिक छवि छाजे॥ सांवरी मूर्ती पर ज
र्द पीतांबर राजे॥ किंकिनि बाजे पग में पांने पैंजनियां॥ लेगयो
सखी री मेरी दधिकी मथनियां॥ ५॥ भोली मुख भोली बतीयां लगती

प्यारे ॥ मनचाहे चित से प्रेम राह रस न्यारी ॥ ग्वालिन की लग
नसे मगन हुए गिरधारी ॥ कह देवी सिंह में कृश्न तेरी वलिहारी
दिनरात तुम्हारा ध्यान धरे यह इनियां ॥ ले गयो सखी री मेरी
दधकी मथनियां ॥

(सखी दौड़)

ब्रजबल्लभ तू हर दम पै दम कोई दम में दम जागा ॥ निकला ।
फिर सोच कर मन में तू पछितायगा हाथों को गल ॥ कर गौर अप
ने दिल में तू यह सब है उसका थल औ जल ॥ हर रंग का रंग है हर
कल में है उसकी कल ॥ मीन कूर्म बाराह कहीं नर सिंह रूप को
धाराजी ॥ एजी हां ॥ करी भक्त पर रक्षा तुमने हिरना कुश को
माराजी ॥ एजी हां ॥ धरकर बावन रूप राज उस वलि का मांग
लिया साराजी ॥ एजी हां ॥ परसुराम नहीं तुही राम कृश्न है तुही
ने गिरवर धाराजी ॥ एजी हां ॥ आप हुये सब बोध किया सब स
तों का नित्याराजी ॥ एजी हां ॥ कलयुग में अवतार प्रभु अब
धरने को विचाराजी ॥ एजी हां ॥ हर जगह है तू आपी आप रहा
घट घट में अंदर व्याप ॥ जो नर करते तेरा जाप ॥ कटें एक प
लमें उन के पाप ॥ निरंजन निर्भय निर्वानी ॥ मेरा है सतगुरु गुरु
ज्ञानी ॥ एजी हां ॥ संत का नहीं अंत वेद पुराण निशि दिन गावहीं
॥ संत कारण विश्नु धर अवतार जग में आवहीं ॥ संत सिंधु अपार
उनका पार नहीं कोई पावहीं ॥ कहे दास देवी संत का साधु मेरे
मन भावहीं ॥ देखो इक जन को होजा संत ॥ तो तेरा कोई न पावै
अंत ॥ बात में कहूं ते रेसे तंत ॥ मिले हिरदे में हरी गुरु संत ॥ मेरा
जो कहना मानोगे ॥ तो आतम को पहचानोगे जी १ ॥

उस दिलवर पर जो आशक होवे काहे ॥ दुनियां से हाथ वो
धो लई धा बैठा है ॥ लग गई जब इश्क की चोट उसके तन को

करलियाफकीरीहालनिकलगयाबनको ॥ सबछोड़े कुटुंबपरिवारमालऔरधनको ॥ जंगलमेंविस्तरकिया मारकरमनको ॥ जोआशकहै तोबैठे सखुन परखनको ॥ बिन इश्क कियहनहींपायेगाइसफनको ॥ लौलगासनमकेदरपरजाबैठाहै ॥ दुनियांसे हाथवोपहलेईधोबैठाहै ॥ १ ॥ जो आशक दिलवर हजूररहे रहतेहैं ॥ कुछकामनहीं आलमसे दूररहतेहैं ॥ जैसे तैयारलड़नेको सूररहतेहै ॥ वैसे आशक आशकीमें चूररहतेहैं ॥ मस्तीमेंमस्तआशाकजरूररहतेहैं मय वह इनके दिलके दिलपर सुनूररहतेहैं ॥ दीदारसनमपर आशकदेकेबैठाहै ॥ दुनियांसे हाथवोपहलेईधोबैठाहै २ जोकरेइश्कमनउसकाहीपक्काहै ॥ दिलवरकेदरकेतलेभिस्मकाहै ॥ वो दिल्वर आशक आशकसादिक्काहै ॥ जिसेकिया इश्कपायादिदारहक्काहै ॥ आश्कीमेंरुतबा पक्के आशकाहै ॥ जोकच्चाहै वह फिरताभीचकाहै ॥ इसनरंगमें घरबार डुबोबैठाहै ॥ दुनियांसेहाथवोपहलेई धोबैठाहै ॥ ३ ॥ उसकूचेका जिसनेरस्तापायाहै ॥ जलवा उसको दिल्वरने दिखलायाहै ॥ आशकीकाकरनामेरेमनभायाहै ॥ आशकीकानूनबासब परमवायाहै ॥ कहैदेवीसिंह यहनया ख्यालगायाहै ॥ बिन इश्ककिसीको ज्ञाननहीं आयाहै ॥ आश्कतोचीजउल्फतकेबो बैठाहै ॥ दुनियांसे हाथवोपहलेईधो बैठाहै ॥ ४ ॥

इश्क आवोजीमेंसरपर बिठलाऊं ॥ कहोसो खातिरकोलाऊं ॥ जो निमकीचाहोतो पियोहमारारखूं ॥ चरपराकहोतो पिया हमाराफूं ॥ अगरमयमांगोतोअभी कहोरोदूं ॥ तुमहौलालोमेंमजनूं ॥ काटदूचेदीदिल अपनापरखाऊं ॥ कहोसो खातिरकोलाऊं ॥ १ ॥ जोकपड़े पहरे तोउतारदूं यह सासा

इसीकोपहनफिरोरंगलाल॥तुम्हेंख्वाहिशहैगरकुलदुनियां
कामाल॥तोदंदाकरदूंगाहरलाल॥मुझेतुमबेचोतोश्रभीमेंबि
कजाऊं॥कहोसो खातिरको लाऊं॥२॥मगरशीरीकोकुछ
चाहितबीयतअब॥तोमेरेमिलादोलबसेसब॥आजआये-
होफिरआवोगेतुमकब॥यहजीचाहताहैलुटादोसबभला
मेंढूंढ़ोतोतुम्हेंकहपाऊं॥कहोसोखातिरकोलाऊं॥३॥जोजे
वरपहरोतोमेरीउलखांका॥मकांहाज़िरहैलामकांका॥
शौकगरतुमकोंकुछहोवेगुलिस्तांका॥मेरातनबनासे-
स्तांका॥मेंइसकेऊपरअबसारेगुलखाऊं॥कहोसो-
खातिरको आऊं॥४॥सुनोतुमगनातोऐसीहिचकियांलू॥
मेंइसमेंसबीरागकहदूं॥जानतकमांगोतोकभीकरूंन
दींदूं॥नसहूंकुतनोबदनहूं॥मेंतुमघरबाहीहरतरहसेहो
जाऊं॥कहोसोखातिरकोलाऊं॥५॥कहायहमेंनेतोइश्क
भीयांबोला॥तूआश्कहैबालाभोला॥हालसबमुझसेअप
नाखोला॥तोहोकाएकहुवाचेलाजगन कहैअबइसके
आगेक्या गाऊं॥कहोसो खातिरको लाऊं॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

बरसेंहग सूखाहिया आगलगेजियाआय
प्रेमप्रीतिकीरीतिमेंयहअनरीतिसुहाय १

॥ शेर ॥

पाचहारेशहरदेहली अबखिजांहै क्याहुवा॥
तोभीकुलदुनियांसेआलायहमकांक्याहुवा
रोवनमेरेयहीये आवाद होगी दोस्तां॥ १॥
इसका कुछ मेरे ही दिलपरवोनिशाहैक्याहुवा
खौफ़सेदुश्मनके मेंडरताहूं कहमनानहीं॥

मक्का मे समभाइसे राजा नि हाँ है क्या हुवा
अबतो और ही दान है और ही मजहब का चलन
उठगया दुनियां से गरबे दों पुरा में क्या हुवा ॥

कहा दुनियां में मरा होगा ॥ तो फिर सब का ही भला होगा ॥ मरे तो मजहब मे मुझ को काम ॥ साथ मे मेरे खुदा होगा ॥ अभी पर बरसेगा जब खून ॥ तो गुल हरेक खिला होगा ॥ सखुन मत समझ मेरा खिल्ली ॥ यह रोशन होवेगी दिल्ली

ख्याल शहर देहली की तारीफ़ ॥

कुल जहान देखा मैने पर सब से अव्वल है देहली ॥ अजब है देहली गोया यह खुदा की घर की है देहली ॥ खल्कु खास को देखा यहां तो क्या ही एक अजब शान से है ॥ हर एक बशर में मुहोब्बत भरी हुई दिलजान से है ॥ निगह नुकीली आनि रछी चा की तेज तीरों पै कान से है ॥ चश्म को देखा तो यह खूं करने के समान से है ॥ हुस्न गुलिस्तां से पढ़ कर नंगी शमशेरे म्यान से है ॥ सखुन वो शीरी दिले.फैयाज शाहे सुलतान से है ॥ • ॥ शेर ॥ • ॥

हैं लड़के शहर देहली में कहूं मैं उनकी क्या खूबी
सरापा नूर अल्ला का वा कुदरत की है महबूबी
सुनै जो बात उनकी वह तो फिर बातों मे आजाये
तबीयत वह रहै उल्फत मे रहे आठों पहर डूबी १

इसी इश्क में मैने तन पर पहन ली अब कफनी सेली ॥ अजब है देहली गोया यह खुदा के घर में है देहली ॥ १ ॥ क्या हिन्दु क्या मुसलमान सब अपनी तरह दारी में है ॥ गोया गुलिस्ता में हर गुल खिले हुए क्यारी में है ॥ आशक पर माशूक है आशक पर के वो यारी में है ॥ इस देहली में कोई मुतलक नहीं ऐयारी

मेंहै॥ कोई करैहरिका सुमिरण कोई रविकी ग्रादगारीमें
है॥ हरफ़नमौला ग्रौरपूरे ग्रपनी मस्तकारी में है॥

॥ शेर ॥

हैवो ग्रायेवहां तो हवाफिरउसकी बंधजाये॥
मवत्तरहो दिमाग़ उसका जोकुछ ग्रांवीहवाखावे
ग्रौरग्रावे संगपीनेसे जोचेहरेपरजोग्राबग्रावे
नउतरेउम्रभरयानी जवानीका मज़ा पावे॥

सबीलोगहैंभलेयहां दखाती नहींकोईजे देहली॥ ग्रजबहै दे
हली यह गोया खुदाके घरकी हैदेहली॥२॥ यहिश्तके मेवे
की लज्जत यहांके खानों में पानमें है॥ तरह तरहकीचीज
तोफ़ा हरेक दुकानमें है॥ इमांकोगौर किया तोसाबित मिला
वो मुफ़ कुरानमें है॥ धरमको देखा तो पूरा ग्राया वेद पुराण
में है॥ है वोजवाहरजो हरीके घरमें कि नहींजहानमें है॥
कानमें पहरेहैं जो कामिनी कहां वो कान में है॥

॥ शेर ॥

चलनदेखायहां तो कुल जहांसे ग्रजब निराला है॥
ग्रौरकद हरएक ग्रादमका गोया सांचे में ढाला है
वोमयख्वारीने कितनोंहीकी ग्रांखें बेसम्हाला है
भुका हो शर्मसे गुल्शन जो नरगिसका प्याला है

इसकी सैरके खानिरमैंने मरमर के फिर फिर देहली॥ ग्रजब
है देहली गोया यह खुदाके घरकी है देहली॥ कई बार लुटग
ई जो देहली तोभी फिरयहगुलज़ार है॥ बसे हुवों से तो वेह
तर उजड़ा हुवा दरया रहे यह॥ हरेक मुल्क नांव इश्कहै सो
सबका सदरिहैयह॥ यहांकीदौलत सबीलेगये तौभीजर
ज़ारहै यह॥

शैर

ज़मीं ह्यां की है वोह जिस्से हो पैदा अल्लाइसा में ॥
वो: हिक्मत है हकीमों की जो कुछ अव्वल थी लुक्मा में
वो जल उज्जल से हैं उज्जल यहां थी मात जमुना में ॥
कहां यह आब है देखो भला उस आब है वा में। । ॥

उसकी मिट्टी सुथरी जिसने यहां की मल तन पै रहली ॥ अज-
ब है देहली गोया यह खुदा के घर के है देहली ॥ ४ ॥ यह देहली
राजा दलीप ने सत युग में आबाद करी ॥ जो जो बादशाह हुए
यहां सबने रवि की याद करी ॥ आखर में नोरंगशाह ने जब
फाका शौं से बाद करी ॥ रफ्ते रफ्ते फकीरों ने यह फिर बर्बाद क
री। अब तो हुक्म रहा उनका यहां से दूर बुन्याद करी ॥ तौभी
मैने नवीयत अपनी इस्में शाद करी १

शैर

कभी है खार गुल्शन में कभी बादे बहारी है
कभी है चौदवीं का माह कभी अख्तर शुमारी है
सुनो अब थोड़े ही दिन में फिर इस्की वो: त्यारी है
जो जीवेगा सो देखेगा सदां यह सच हमारी है
बनारसी से जेहल करै तो उसी को सब कहते जेहली
अजब है देहली गोया यह खुदा के घर की है देहली ५

इति श्री लावनी ब्रह्मज्ञान समाप्तः

सम्बत् १९५२